आरोहण

वर्ष : 2014 - 2015

सूर्य मन्दिर मोढेरा

सूर्य मन्दिर मोढेरा हिन्दू देवता सूर्यदेव को समर्पित है। यह अहमदाबाद से 102 कि.मी. और महेसाणा जिला मुख्यालय से 25 कि.मी. की दूरी पर पुष्पावती नदी के किनारे स्थित है। इसका निर्माण सोलंकी वंश के राजा भीमदेव प्रथम के द्वारा 1026 ई. में करवाया गया। वर्तमान में, इस मन्दिर में पूजा करना निषेध है और यह मन्दिर भारतीय पुरात्तत्व विभाग की देखरेख में है।

गुजरात के महेसाणा जिले में स्थित यह मन्दिर गुजरात के स्वर्णिम अतीत का प्रतिबिम्ब है। स्कंद पुराण और ब्रह्म पुराण के अनुसार, मोढेरा के आस-पास का क्षेत्र प्राचीन समय में धर्मरण्य के नाम से जाना जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ था, "सदाचारी और नेकी का जंगल क्षेत्र।" इन पुराणों के अनुसार रामायण के युद्ध में ब्राह्मण पुत्र, रावण, की हत्या अर्थात ब्रह्म हत्या या ब्राह्मण हत्या से मुक्ति के लिए श्रीराम ने महर्षि वशिष्ठ से ऐसा स्थान बताने के लिए निवेदन किया था जहाँ पर जाकर वे ब्रह्म हत्या से मुक्त हो सके। तब महर्षि वशिष्ठ के निर्देशानुसार श्रीराम ने इसी धर्मरण्य में मोढ़ेरल गाँव की स्थापना करके, वहाँ यज्ञ किया था। यह सूर्य मन्दिर स्थापत्य कला का अदभुत नमूना है। यह मुख्यत: तीन भागों में बटाँ हुआ है : सूर्य कुंड या रामकुंड, सभा मंडप और गदा मंडप।

प्राचीन भारत और समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति लगाव व आकर्षण पैदा करने के लिए, प्रत्येक वर्ष जनवरी माह में उतरायण पर्व के उपरांत तीन दिन तक मोढेरा डांस फेस्टिवल का आयोजन टूरिज्म कोर्पोरेशन ऑफ गुजरात के द्वारा किया जाता है।

आरोहण

वर्ष : 2014-2015

संयुक्त प्रकाशन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा)

गुजरात, अहमदाबाद

और

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय)

गुजरात, अहमदाबाद

आरोहण

प्रकाशक : कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद
और
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात,
अहमदाबाद की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुद्रक : मंजु ट्रेडर्स
अहमदाबाद
मो. 9825575447

इस अंक मे प्रस्तुत रचनाकारों के विचार स्वतंत्र है और उनकी रचनाओं की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जिम्मेदारी स्वयं रचनाकारों की है। पत्रिका परिवार का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी वाद-विवाद का न्यायिक क्षेत्र अहमदाबाद, गुजरात होगा।

आरोहण

'पत्रिका – परिवार'

वर्ष : 2014-2015

संरक्षक	:	**श्री यशवंत ठाकरे**	प्रधान महालेखाकार कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद
	:	**श्री डी.पी. यादव**	प्रधान निदेशक कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद
सम्पादक मण्डल	:	**श्रीमती मल्लिका मुखर्जी**	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
		श्रीमती मोनिका दवे	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
		श्री अनिल कुमार बेनीवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
		श्री अजय शुक्ल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
		श्रीमती रीना अभ्यंकर	पर्यवेक्षक
		श्री अरूण जांगिड़	हिन्दी अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद.

संदेश

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.ले.प.) गुजरात, अहमदाबाद एवं कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) की संयुक्त हिन्दी पत्रिका "आरोहण" के वर्ष 2014-15 के प्रकाशन पर दोनो कार्यालयों के सभी सदस्यों, रचनाकारों और संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

"आरोहण" के द्वारा हिन्दी के प्रति लगाव बढ़ता है, विचारों का आदान-प्रदान होता है और भारत और इंडिया के बीच का दायरा कम करने का प्रयास किया जाता है।

पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न विषयों से सम्बधित लेखों - कविताओं के द्वारा रचनाकारों के विविध क्षेत्रों से सम्बधित ज्ञान व अनुभव को दूसरों के साथ साझा करके हमारी मूलभूत विचारधारा को हिन्दी में विकसित करने का सार्थक प्रयास किया जाता है।

कार्यालय की तरफ से व व्यक्तिगत तौर पर मेरी तरफ से पुनः हार्दिक बधाई।

हस्ता /-

(यशंवत ठाकरे)

प्र.म.ले.(आ.एवं रा.क्षे.ले.प.) गुजरात एवं संरक्षक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद

संदेश

विभागीय पत्रिका आरोहण का नवीनतम अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य यह है कि इसके माध्यम से राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो, कर्मचारियों की प्रतिभा प्रकाश में लाई जाए, रचनात्मक कार्यों को बढ़ावा मिले और हिन्दी भाषा एवं साहित्य समृद्ध हो।

राजभाषा होने के साथ-साथ हिन्दी सर्वाधिक समझी एवं बोली जाने वाली जनभाषा भी है। संस्कृतज होने के कारण यह अन्य कई भारतीय भाषाओं से मिलती जुलती है, इस वजह से हिन्दी सीखना अत्यन्त ही सरल है। हिन्दी सामान्य जनसमुदाय की भाषा है एवं आज नई पीढ़ी का लगभग हर व्यक्ति हिन्दी समझ सकता है। भारत में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य कोई देशी-विदेशी भाषा प्रभावी संपर्क भाषा नहीं हो सकती है।

जिस तरह बूँद-बूँद से महासागर बन जाता है, वैसे ही हम सभी के छोटे छोटे प्रयत्न मिलकर निश्चित रूप से हिन्दी भाषा एवं देश की प्रगति में सहायक सिद्ध होंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं, संपादक मण्डल के सदस्यों एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

हस्ता /-

(डी. पी. यादव)

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) एवं संरक्षक

संपादकीय

भारतकी भाषायी स्थिति और उसमें हिन्दी के स्थान को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा है। हिन्दी की भाषागत विशेषता यह भी है कि यह अन्य भाषाओं की तुलना में सहज और सरल है तभी तो दूसरी भाषाओं के शब्द भी बडी आसानी से इसमें समाहित हो जाते है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिन्दी ने अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। धीरे धीरे हिन्दी अंतरराष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन रही है। संख्या की दृष्टि से भी हिन्दी विश्व की तीन बड़ी भाषाओं में से एक है। हमारे लिए गर्व की बात है कि विश्वभर में हिन्दी का उद्धयन आज वे लोग भी कर रहे हैं जो हिन्दी भाषी या भारतीय मूल के नहीं है।

हिन्दी भाषा के साहित्य ने पिछली एक सदी में बड़ी तेजी से विकास किया है वह कविता, कहानी, उपन्यास, तथा चिंतनपरक साहित्य के क्षेत्र में इतनी विकसित हुई है कि किसी भी भाषा के श्रेष्ठ साहित्य का मुकाबला करने में सक्षम है। इलेक्ट्रोनिक संचार-माध्यम और कम्प्यूटर आदि के उपयोग में भी हिन्दी में धीरे धीरे अपनी जगह बना ली है। हम उम्मीद रखते है हिन्दी हमारे चिंतन की, हमारे सपनों की, हमारी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्वायत्ता की रक्षा की भाषा बन कर उभरेगी।

आरोहण पत्रिका कार्यालय के सदस्यों को ऐसा ही एक मंच प्रदान करती है। अपनी रचनाओं के माध्यम से रचनाकार अपने विचार, अपनी संवेदनाएँ आप तक पहुँचाते हैं। पत्रिका के माध्यम से हिन्दी साहित्य और समृद्ध हो यही हमारी कोशिश है।

पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों का संपादक मंडल हृदय से आभारी है। पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी सदस्यों का संपादक मंडल धन्यवाद करता है। पाठकगण से अनुरोध है कि आरोहण से संबंधित सुझाव भेजकर पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित।

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना का नाम	रचयिता का नाम	पृष्ठ सं.
1.	आपके पत्र		9
2.	सीएजी की भूमिका: उपयोगिता व विस्तार	निशांत बोयल	15
3.	राजभाषा तथा हिन्दी	रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र	16
4.	इंसान का नजरिया	वजीर सिँह	21
5.	जीवन	प्रदीप मधेशिया	22
6.	नारी जीवन में शिक्षा का महत्व	हरि गोविन्द	23
7.	सच्ची खुशी	रीतू सिँह	24
8.	आरक्षण वरदान या अभिशाप	हंसराज	25
9.	एक बार फिर	मल्लिका मुखर्जी	26
10.	प्रेम का पाठ	रीतू सिँह	27
11.	महाराणा प्रतापसिंह	हितेश लिम्बाचिया	28
12.	दान	कविता सिँह	30
13.	आवाहन	मल्लिका मुखर्जी	31
14.	तृष्णा का स्वरूप	रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र	32
15.	माँ	हंसराज	34
16.	युवा पीढी के लिए अनुशासन का महत्व	छत्रपाल सिंह राठौर	35
17.	अर्थ के सही अनुमान में ही सार्थकता है	वजीर सिँह	36
18.	नक्षत्र अध्ययन	अजय शुक्ल	37

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	रचना का नाम	रचयिता का नाम	पृष्ठ सं.
19.	गीतिका	रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र	43
20.	कैसे कह दूँ उपवन तेरा मधुमास बना रह पायेगा	विद्या अैय्यर	44
21.	खामोशी	ए. एम. दवे	45
22.	मेरे नाना मेरे आदर्श	सोहम मुखर्जी	46
23.	नेपाल में आया भूकम्प	कविश राठौर	48
24.	दृष्टि	प्रदीप मधेशिया	49
25.	मन पर नियंत्रण	ए. एम. दवे	50
26.	हिन्दी पखवाड़ा 2014		52
27.	कार्यालयीन गतिविधियाँ		53

आपके पत्र

1. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका आरोहण की प्रति पत्रांक हि.अ. ले.प. फा-115.आ.प्रे. जा.क्र. 70 दिनांक : 06-01-2015 द्वारा प्राप्त हुई। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अति उत्तम है। साथ ही पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं ने पत्रिका की शोभा वृद्धि की है। रचनाओं में ''स्त्रीः शांती की और'', ''धारा 80 सी के तहत शिक्षण / विद्यालय / शिक्षा शुल्कों में कटौती'' ''खुदा का घर'', ''आरक्षण'' ''वृद्ध जनों की पुकार'', ''माँ, मुझे हनुमान बनना होगा'', ''तुम मेरी हो,'' विशेष रुप से प्रभावित करने वाली हैं। आशा है भविषय में भी आपकी पत्रिका इसी भाँति नए कलेवर केसाथ हमारा ज्ञानवर्धन करेगी। शुभकामनाओं सहित।

लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

2. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका आरोहण का वार्षिक अंक प्राप्त हुआ। डॉ मालती दुबे द्वारा लिखित 'स्त्री : शान्ती की ओर' तथा सौरभ अवस्थी द्वारा लिखित 'संयुक्त परिवार का महत्व', महीपाल सिंह द्वारा लिखित 'आरक्षण' आलेख सार्थक एवं विचारोत्तेजक है। नीतू रानी डैला द्वारा लिखित 'माँ, मुझे हनुमान बनना होगा' तथा कुमार शर्मा 'अनिल' द्वारा लिखित 'तुम मेरी हो' कहानियाँ बहुत ही मार्मिक तथा प्रेरणादायक हैं। मल्लिका मुखर्जी द्वारा रचित 'दोहरी मार', सुमित कुमार सक्सेना द्वारा रचित 'अच्छा नहीं लगता' नामक करविताएं भावप्रवण एवं सार्थक हैं। हिमांश एस. वर्मा द्वारा रचित यात्रा - वृतांत 'कुल्लू-मनाली की यादें' सराहनीय है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष), (भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग, चण्डीगढ़) कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़

3. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''आरोहण'' के वार्षिक अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का क्लेवर अपनी भव्यता लिए हुए हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं

पठनीय एवं सराहनीय है। विशेषकर सुश्री मल्लिका मुखर्जी की कविता "और किसी से क्या लडना" श्री सोहम मुखर्जी का लेख "बतखों की परवरिश", कुमार शर्मा 'अनिल' की कहानी "तुम मेरी हो", श्री हंसराज जी की हास्य कविता "बहादुरी का पुरस्कार" विशेष रुप से प्रशंसनीय है !

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, राजभाषा अनुभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), राजस्थान, जयपुर

4. उपर्युक्त विषय पर आपके पत्र संख्या हि.अ. ले.प. फा-115आ.प्रे. जा.क्र. 98 दिनाक 6-1-2015 के साथ प्रेषित हिन्दी पत्रिका "आरोहण" के वार्षिक अंक 2013-14 की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा एवं छायाचित्र उत्कृष्ट है। मुख पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। विशेष रुप से "माँ मुझे हनुमान बनना होगा", "और किसी से क्या लड़ना है" "स्त्रीः शांति की ओर", "तुम मेरी हो" और "क्या है मेरी पहचान" रचनाएँ प्रशंसनीय है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति और उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

लेखा परीक्षा अधिकारी (हिन्दी) कक्ष, कार्यालय प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा) पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर

5. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका आरोहण अंक 2013-14 की एक प्रति प्राप्त हुई है। पत्रका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धनक, रोचक एवं शिक्षाप्रद है। विशेषकर सुश्री सुषमा रविराज का लेख "पर्यावरण" श्री सौरभ अवस्थी का लेख "संयुक्त परिवार का महत्व", श्री रंजीत कुमार की लघुकथा "माँ मैं पार्टी में गया था", श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की कहानी "तुम मेरी हो" श्री गौरांग वालेरा की कविता "90 का दूरदर्शन और हम" आदि रचनाएं अत्यन्त सराहनीय है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति कि शुभकामनाओं के साथ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी), प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा) ओडिशा, भुवनेश्वर

6. आपके कार्यालय के दिनांक 5-1-2015 के पत्राकं हि.अ. ले.प. फा-115 आ.प्रे. जा.क्र. 87 के माध्य से आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''आरोहण'' की एक प्रति प्राप्त हुई । अतः आभार स्वीकार करें ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सुरुचिपूर्ण, सरस तथा ज्ञानप्रद हैं। ''क्या है मेरी पहचान'' (सालिमा लाजर), ''निर्भया'' (श्री रविकांत शर्मा) तथा ''शाकाहार'' (श्री शोभित कुमार) रचनाएं विशेष रुप से प्रभावित करती हैं। पत्रिका की साज-सज्जा भी उत्तम है ।

हिंदी सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका ''आरोहण'' के उज्जवल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं ।

हिंदी अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), पंजाब

7. आपकी विभागीय हिन्दी पत्रिका आरोहण के वार्षिक अंक 2013-14 प्रति साभार प्राप्त हुई। पत्रिका चित्र चयन, मुद्रण एवं संपादन की दृष्टि से यह अंक सराहनीय है। पत्रिका में समाहित स्तरीय रचनाओं के लिए चयनकारों को बधाई । श्री मुस्तुफा शेख की रचना ''स्वतंत्र भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक'' में 1948 से जब तक के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षकों का नाम और उनके कार्याकाल का दिया गया विवरण प्रशंसनीय है ।

पत्रिका में सभी रचनाएँ सरस है फिर भी उनमें सुश्री सुषमा रविराज की रचना ''पर्यावरण'' बहुत ही प्रेरणादायी, सामयिक, संस्कारपूर्ण एवं संदेशात्मकता से ओतप्रोत है साथ ही सुश्री नीतू रानी डैला की रचना ''माँ मुझे हनुमान बनना होगा'' हास्य से ओतप्रोत एवं पाठकों का मन सहज ही मोहने वाली रही है। रचनाकारों, संपादकमण्डल व पत्रिका परिवार को राजभाषा हिन्दी के प्रति इस अतुलनीय निष्ठा के लिए आभार सहित हृदय से धन्यवाद तथा पत्रिका को दीर्घायु प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना के साथ पत्रिका परिवार के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी अनुभाग, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) गुजरात, राजकोट

8. आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका ''आरोहण'' की एक प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका का संयोजन एवं मुखपृष्ठ उत्तम है। संकलित की गई सभी रचनाएं सरस एवं पठनीय है। विशेष रुप से डॉ.

मालती दुबे का लेख ''स्त्रीः शांति की ओर'' रेखा काम्बले का ''माँ का दर्द'' रंजीत कुमार की कहानी ''माँ मैं एक पार्टी में गया था'' श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की ''तुम मेरी हो'' एवं सुश्री मल्लिका मुखर्जी की कविता ''और किसी से क्या लडना है'' प्रशंसनीय है।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हमारे कार्यालय की तरफ से बधाइयां एवं उसके उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखाअधिकारी हिन्दी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - प्रथम, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

9. आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका के 2013-14 अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई। पत्रिका की रुप सज्जा तथा रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रति आपकी सक्रियता व राजभाषा निष्ठा की परिचायक है। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा तथा उत्साह का संचार होगा। श्री वीरेन्द्र कुमार डैला की कहानी ''संस्कार ही तो है सबसे बडी धरोहर'', श्री सुनील देसाई की कहानी ''समय पर निदान'' एवं श्री अश्विन दवे की कहानी ''बेटियाँ'' मार्मिक है। श्री सौरभ अवस्थीका लेख ''संयुक्त परिवार का महत्व'' श्री कविश राठौर का लेख ''महंगाई की मार'' एवं श्री महिपाल सिंह का लेख ''आरक्षण'' भी ज्ञातवर्धक है।

पत्रिका के सफल आगामी अंक के लिये शुभकामनाएं एवं बधाई। सादर।

संपादक वीरांगना, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- द्वितीय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

10. पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्रीमती सुषमा रविराज का लेख ''पर्यावरण'' श्रीमती विद्या अय्यर का लेख ''ब्रह्मपुत्र नदी तट के नगर'' डॉ. मालती दुबे का लेख ''स्त्रीः शांति की और'' श्री पवन सिंगला का लेख ''धारा 80 सी के तहत शिक्षण विद्यालय शिक्षा शुल्कों में कटौती'', श्री सौरभ अवस्थी का लेख ''संयुक्त परिवार का महत्व'' श्री अनिल कुमार बेनिवाल का लेख ''खुदा का घर'' श्री सी.पी.एस. राठौर का लेख ''समय का सदुपयोग'' श्री विरेंद्र कुमार डैला की कहानी ''संस्कार ही तो सबसे बडी धरोहर'' श्रीमती नीतू रानी डैला की लघुकथा ''मां मुझे हनुमान बनना

होगा'', श्री रंजीत कुमार की लघुकथा ''मैं एक पार्टी में गया था,'' सुश्री धनवंती टिब्बानी की लघुकथा ''कर्म की महानता'', श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की कहानी ''तुम मेरी हो'', श्री सूरज किशोर की कविता ''चाँद का झिंगोला'' श्री रमेश चन्द्र शर्मा 'चंद्र' की दोनों कविता ''गीतिका'' श्री हंसराज की कविता ''बहादुरी का पुरस्कार'' श्री सुनील देसाई की कविता ''मातापिता से प्रार्थना'', श्री गौरांग वालेरा की कविता ''90 का दूरदर्शन और हम'' तथा श्री शोभित कुमार की कविता ''शाकाहार'' आदि रचनाएँ ज्ञानवर्धक, सराहनीय तथा दिल को छू जाने वाली रचनाएं हैं। पत्रिका मुख तथा अंतिम पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी अधिकारी, महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-द्वितीय महाराष्ट्र, नागपूर

11. आपके आयुक्तालय कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय गृह पत्रिका ''आरोहण'' के वार्षिक अंक 2013-14 की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, धन्यवाद।

इनमें शामिल रचनाएँ रोचक एवं प्रेरणादायी है।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुत्कालय, अहमदाबाद-I

12. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी की ''आरोहण'' प्रत्रिका के वार्षिक अंक 2013-14 की एक प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका की सभी रचनाएं उत्कृष्ट व ज्ञानवर्धक है।

हिन्दी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय हैं, इसके लिए आप सभी बधाई पात्र हैं। शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिन्दी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ

13. आपके कार्यालय की विभागीय हिन्दी पत्रिका आरोहण की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका का आवरण, साज-सज्जा व सामग्री संकलन आकर्षक एवं सराहनीय है।

सुश्री सालिमा लाजर की कविता ''क्या है मेरी पहचान'' श्री रंजीत कुमार की लघुकथा ''माँ मैं एक पार्टी में गया था'' श्री सौरभ अवस्थी का लेख ''संयुक्त परिवार का महत्व'' श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की कहानी ''तुम मेरी हो'' एवं

श्री हंसराज की कविता ''बहादुरी का पुरस्कार'' की रचना विशेष सराहनीय है। पत्रिका के सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी राजभाषा, भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) राजस्थान, जयपुर

14. आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका आरोहण के वार्षिक अंक की प्रति प्राप्त हुई । धन्यवाद । पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं सुंदर है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं, लेख एवं कविताएं रोचक, ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं सारगर्भित हैं । ये विशेष रुप से सराहनीय है।

हमारा कार्यालय की ओर से पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान सम्पादक, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा

15. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'आरोहण: 2013-14' के नूतन अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका का भाव और शिल्प पक्ष दोनों ही सराहनीय हैं। मुख पृष्ठ का आकर्षण भारतीय स्थापत्य कला का दर्शन करवाता है।

पत्रिका में समाविष्ट अधिकतर रचनाएँ युगधर्मिता को साकार कर रही हैं, यथा नीतू रानी का संस्मरण 'मां, मुझे हनुमान बनना होगा' स्त्री विमर्श का जीता - जागता उहाहरण है तो 'वृद्ध जनों की पुकार' लेख आज के समाज का कटु सत्य और संस्कार के ह्रास की कहानी है। मल्लिका मुखर्जी की 'दोहरी मार', रमेश चन्द्र की 'गीतिका', रविकान्त की 'निर्भया' मानव मन को स्पर्श करती है और '90 का दूरदर्शन और हम' काव्य पढ़कर हम अतीत की सुनहली यादों में बंध जाते हैं।

पत्रिका अपने उद्देश्यों की पूर्ति सचेत रुप से कर रही है। सम्पादक मण्डल का विशेष परिश्रम प्रसंशनीय है। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

डॉ. मालती दुबे
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद-14.

सीएजी की भूमिकाः उपयोगिता व विस्तार

निशांत बोयल

भारतीय गणतंत्र की अनेकों विशेषताओं में सम्मिलित है, शक्तियों का पृथक्करण व नियंत्रण व संतुलन की संवैधानिक व्यवस्था । इन्हीं विशेषताओं के चलते संविधान में ही ऐसी संवैधानिक संस्थाओं की व्यवस्था की गयी जिससे कि शक्तियों के पृथक्करण और नियंत्रण व संतुलन के सिद्धांतों की निरंतरता व उपयोगिता सुनिश्चित की जा सके ।

इसी क्रम में भारत के नियंत्रक व महालेखापरीक्षक के कार्यालय की स्थापना की गयी, जिसका उद्देश्य कार्यपालिका की गतिविधियों का निरपेक्ष मूल्यांकन करना व पारदर्शिता और सुशासन जैसे लक्ष्यों की प्राप्ति में एक लोकतान्त्रिक साधन उपलब्ध करवाना है । पारदर्शिता, सुशासन व भ्रष्टाचार नियंत्रण सदैव ही राजनीतिक व सामाजिक प्रशासकों के उच्चतम लक्ष्य रहे है, ऐसे में सीएजी संस्था के प्रतिवेदन को राजनैतिक व सामाजिक प्रशासन के अनुपूरक व सहयोगी के तौर पर एक सकारात्मक भूमिका में देखा जाना चाहिए । वर्तमान भारतीय तंत्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ भी यही मुद्दे हैं, जिनका हल ढूंढने में सम्पूर्ण तंत्र व संसाधन लगे हुए हैं । ऐसे में वे सभी संस्थाएं जो संवैधानिक है, लोकतान्त्रिक हैं, व जिन्हें किसी भी प्रकार की निर्णयन, मूल्यांकन या परीक्षण इत्यादि की शक्तियों से सुसज्जित किया गया है, ये उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वे स्वमेव तंत्र की पुनर्संरचना या कम से कम पुनर्द्धार में और अधिक जीवंत भागीदार बनें । भारतीय न्यायपालिका, निर्वाचन आयोग, सीएजी कार्यालय इत्यादि ऐसी ही संस्थाएं हैं जिनकी जिम्मेदारी बेहद अहम् है व न्यूनाधिक रूप में इनकी प्रतिष्ठा भारतीय जनमानस में गहरी है ।

निरंतर व तेजी से परिवर्तनशील वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में तीव्र विकास के लिए निजीकरण व सार्वजनिक – निजी भागीदारी जैसे साधनों का प्रयोग अधिक होने लगा है और राजकीय हस्तक्षेप व नियंत्रण की संभावनाएं उत्तरोत्तर क्षीण हो रही है, ऐसे में सीएजी जैसे सजग प्रहरी की आवश्यकता राष्ट्र हित में बढती जा रही है । इस दौर में लोक कल्याणकारी सरकारें अपनी प्राथमिकतायें बदल रही हैं व केवल Facilitator की भूमिका तक ही स्वयं को सीमित करती जा रही हैं । ऐसे में सीएजी जैसी संस्थाओं को अपनी सक्रियता व दक्षता में वृद्धि करनी होगी । संतुलित व धारणीय विकास की चुनौतियों तथा संसाधनों का समुचित प्रयोग, समग्र विकास व पर्यावरणीय चिंताओं का एक निश्चित हल प्रदान करना सीएजी के कर्तव्यों में स्वतः शामिल हो जाता है ।

इस परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि सीएजी के प्राधिकार में वृद्धि की जाये । तदुपरांत ही सीएजी संस्था हमारे लोकतंत्र को और पुष्ट करने में सहायक होगी व राष्ट्र का संतुलित किन्तु न्यायोचित विकास सुनिश्चित करने में सहायक होगी ।

राजभाषा तथा हिन्दी

रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र

हिन्दी के लिये प्राय: राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा व राजभाषा का प्रयोग किया जाता है। वस्तुत: ये तीनो शब्द भिन्न-भिन्न अर्थो के द्योतक है। आज हिन्दी को इन तीनों नामों से अभिहित किया जा सकता है कारण कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा व राजभाषा तीनों ही है। भारत के संविधान में, राजभाषा शब्द में, राजभाषा का कार्य तथा सम्पर्क भाषा का कार्य भी समाहित रहता है। राजभाषा उस राज्य की राज्यभाषा भी हो सकती है, पर सम्पर्क भाषा के रूप में अधिकांश भागों में हिन्दी को ही स्वीकार किया जाता है। पराधीन रहते हुये भी मुगलो तथा अंग्रेजों के समय में क्रमश: राजभाषा के रूप में फारसी तथा अंग्रेजी का अधिपत्य रहने पर भी भारतीय जन समाज की पारस्परिक विचार – विनिमय की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही रही। राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित न होने पर भी आसेतु हिमालय तथा अन्तर्दे शीय जन-सम्पर्क की एक मात्र भाषा के रूप में सहज ही प्रतिष्ठित हो गयी। इस भावना की चरम सीमा भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन के समय दिखायी पड़ती है। समस्त जननायकों ने चाहे वे किसी भी प्रदेश के रहे हों, वे राष्ट्रभाषा हिंदी के समर्थक रहे :

महात्मा गाँधी	गुजरात
लाला लाजपतराय	पंजाब
मदनमोहन मालवीय	उत्तर प्रदेश
लोकमान्य तिलक	महाराष्ट्र
राजेन्द्र प्रसाद	बिहार
रवीन्द्रनाथ टैगोर	बंगाल
सी. राजागोपालाचार्य	तमिलनाडु
मोरारजी देसाई	गुजरात
कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी	गुजरात

14 सितम्बर, 1949 से पूर्व हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तथा सम्पर्क भाषा तो थी किन्तु राजभाषा नहीं थी। संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को केन्द्र सरकार की राजभाषा के रुप में स्वीकृत किया तथा इस प्रावधान को संविधान के भाग 17 में सम्मिलित किया।

हिन्दी बहुत लम्बे समय से देश की सम्पर्क भाषा रही है। उस समय भारत में पाकिस्तान तथा बांगलादेश भी सम्मिलित थे अर्थात् उनका जन्म नहीं हुआ था। हिन्दी के द्वारा पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के लोग धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, व्यापारिक आदि सभी दृष्टियों से जुड़े हुये थे। सारे देश को जोड़ने वाली एक मात्र भाषा हिन्दी ही रही है। महात्मा गाँधी ने कोंग्रेस

पार्टी के सभी सदस्यों को दो बातें अनिवार्य कर दी थीं - हिन्दी और खादी। स्वतंत्रता संग्राम का, हिन्दी एक अटूट अंग बन गयी थी। हिन्दी भाषा के माध्यम से ही स्वतंत्रता की पूरी लडाई लड़ी गयी थी।

देश के बाहर रहने के उपरान्त भी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज का संचालन हिन्दी में ही करते थे। भारतीय संविधान की अष्टम सूची में देश की अठारह भाषायें हैं। संस्कृत, सिंधी व नेपाली को छोड़कर शेष सभी भाषायें अपने अपने राज्य में राजभाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। हिन्दी केन्द्र की राजभाषा होने के अतिरिक्त उत्तरप्रदेश, उत्तराखड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली राज्यों की राजभाषा है। अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह, दादर और नागर हवेली तथा लक्षद्वीप में हिन्दी के साथ साथ अंग्रेजी भी राजभाषा है।

इस समय भारत की जनसंख्या एक अरब से अधिक है और अनुमान के अनुसार हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग पचास प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त देश के अधिकांश राज्यों में द्वितीय तथा तृतीय भाषा के रुप में बोली व समझी जाती है। इससे सिद्ध होता है कि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की भाषा है। यही कारण है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरवमय पद प्राप्त हुआ। यह पद जनता जनार्दन की स्वीकृति से प्राप्त हुआ है, जैसे गाँधी जी को महात्मा व राष्ट्रपिता, जय प्रकाश नारायण को लोकनायक कहा, वैसे ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा। ऐसा दुर्लभ संयोग बहुत कम देखते में आता है कि राष्ट्र में एक ही सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा तीनों ही रुप में प्रयुक्त होती हो। यह हिन्दी की शक्ति तथा लोकमान्यता का प्रमाण है।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से समाचार तथा आंखों देखा-हाल हिन्दी व अंग्रेजी में प्रसारित होते है। विभिन्न खेलों की कमेन्ट्री भी अब बारी-बारी से हिन्दी व अंग्रेजी में प्रसारित होती है। देश भर में अब टेलीप्रिन्टर हिन्दी में है। कम्प्यूटर में जिस्ट तकनीक के प्रवेश के बाद कोई भी समाचार हिन्दी देवनागरी लिपि के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में एक साथ मुद्रित हो जाता है। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के सन्दर्भ में हिन्दी सर्वोच्च स्थान पर है। फादर कामिल बुल्के के अनुसार भारत के सभी धर्मों और विभिन्न भाषा-भाषियों ने हिन्दी के विकास में योगदान दिया। वह किसी विशिष्टवर्ग, प्रदेश या समुदाय की भाषा न होकर भारतीय जनता की भाषा है। धार्मिक स्थलों एवं तीर्थों की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है। कन्याकुमारी से वैष्णो देवी तक, केरल, बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान के तीर्थ यात्री हिन्दी में ही वार्तालाप करते है। प्रतिदिन कार्य - व्यवहार की सम्पर्क भाषा हिन्दी ही है। सार्वदेशिक महत्त्व को समझते हुये समाज सुधारको, साधू संतों तथा देश-भक्तों ने हिन्दी

को सम्पर्क भाष का रूप दिया और भारत भर में प्रचार प्रसार किया।

जब से हिन्दी को केन्द्र में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ, तभी से राजनैतिक कुचक्रों का शिकार हो गयी। भारत को स्वतंत्र हुये 6 दशक से अधिक हो गये किन्तु भारत की राजभाषा अब भी अंग्रेजी बनी हुई है। संविधान के अनुसार 26 जनवरी 1965 से अंग्रेजी को राजभाषा के पद से हटा देना चाहिये था, पर कुत्सित राजनीति के कारण अब तक ऐसा नही हो सका है। हमारे उस समय के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने अंग्रेजी को राजभाषा के पद पर बनाये रखने की अनंत कालीन व्यवस्था कर डाली, जिसका दुष्परिणाम है कि दासी अंग्रेजी महारानी के आसन पर विराजमान है और महारानी हिन्दी के साथ दासी जैसा व्यवहार किया जाता है। महात्मा गाँधी कहते थे इस देश में अंग्रेजी को यदि इसी प्रकार बनाये रखा जाता है तो हमारी स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा।

किसी भाषा को राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के लिये निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाता है :-

1. राष्ट्र के बहु संख्यक लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती हो।
2. उसका साहित्य, ज्ञान की विविध शाखाओं में विस्तृत तथा उच्च कोटि का हो।
3. शब्द भण्डार व विचार - क्षेत्र व्यापक हो।
4. व्याकरण सरल व सर्वग्राह्य है।
5. आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता हो।
6. लिपि सरल व वैज्ञानिक हो।
7. साहित्य में राष्ट्रीय संस्कृति की आत्मा मुखरित हो।
8. भावात्मक एकता स्थापित करने की शक्ति हो।

उपर्युक्त सभी आवश्यकताओं को हिन्दी पूरा करती है। बोलने वालों एवं समझने वालों की दृष्टि से हिन्दी विश्व में प्रथम स्थान पर है।

संविधान ने हिन्दी के सर्वांगीण विकास तथा अंग्रेजी से मुक्ति के लिये सर्वप्रथम पन्द्रह वर्ष का समय दिया था। अंग्रेजी के भक्त यह बताते हैं कि अंग्रेजी के बिना काम ही नहीं चलेगा। क्या जापान, रूस व चीन ने अंग्रेजी के माध्यम से विकास किया है ? नहीं, उन्होंने विकास अपनी भाषा के माध्यम से किया है। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे नेता विदेशों में अंग्रेजी बोलते है। वहाँ के लोग पूछते हैं- क्या आपके देश की कोई भाषा नहीं है ? कितना लज्जित होना पड़ता है ? लज्जित होकर भी अंग्रेजी मोह का त्याग नहीं करते। वर्ष 1963 में एक विधेयक पारित करवा कर हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी भी राजभाषा बना दी गयी। यह कहीं भी अंकित नहीं है कि अंग्रेजी भारत में कब तक राजभाषा बनी रहेगी ? संविधान ने भारत की जनता को अपनी भाषा

में राजकाज करने का जो अश्वासन दिया था, उसका क्या हुआ ? सच तो यह है कि अप्रत्यक्ष रुप से अंग्रेजी को ही राजभाषा बना दिया। ऐसे विश्वासघात की घटना संभवतः अन्यत्र न मिले। अंग्रेजी मात्र तीन प्रतिशत लोगों की भाषा है अपनी भाषा के अभाव में राष्ट्रीय एकता स्थापित होना कठिन होता है।

राजभाषा हिन्दी के साथ समस्त भारतीय भाषाओं का भविष्य जुड़ा हुआ है। केन्द्र सरकार में वर्चस्व अंग्रेजी का है। अतः संघर्ष भी अंग्रेजी से ही है, न कि किसी अन्य भारतीय भाषा से राष्ट्र की भाषा से एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न राष्ट्रीय एकता का भी जुड़ा हुआ है। मार्कटली ने कहा था - निश्चित रूप से एक विदेशी भाषा की नींव पर भारतीय राष्ट्रीयता का निर्माण नहीं हो सकता। भारत सात भाव गाँवो में बसता है। ग्रामीण लोग अंग्रेजी नहीं जानते, वहाँ अंग्रेजी माध्यम के स्कूल भी नहीं है। तो क्या उनका विकास नहीं होगा ? उनका विकास उनकी भाषा से ही होगा। कब तक तीन प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाले भारत पर शासन करते रहेंगे ? क्या ऐसी शासन-व्यवस्था लोकतंत्र को हास्यास्पद नहीं बनाती ? यह तो हमारे लोकतंत्र व स्वाधीनता से जुडा हुआ ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर देना ही होगा।

महात्मा गाँधी कहा करते थे - अंग्रेजी का मोह हमारे मन से जब तक नहीं हटेगा, हमारी भाषाये कंगाल रहेंगी, अर्थात हम कंगाल रहेंगे, देश कंगाल रहेगा। गाँधीजी ने एक बार कहा था - विश्व से कह दो कि गाँधी अंग्रेजी नहीं जानता। वे अंग्रेजी जानते थे, वे चाहते थे कि भारत का राजकाज भारत की भाषा हिन्दी में हो। हिन्दी भाषा, अपनी शब्द सम्पत्ति, ग्रहण शीलता, वैज्ञानिकता तथा सरलता के कारण बहुत शक्तिशाली है। कमाल पाशा जैसी भावना हृदय में पैदा करनी चाहिये।

सरकारी स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन के लिये राजभाषा विभाग बनाया गया है। इसके लिये तीस सदस्यीय राजभाषा समिति का गठन किया गया है, जिसमें 20 लोकसभा के सदस्य तथा 10 राज्यसभा के सदस्य होते हैं। यह समिति समय-समय पर हिन्दी के प्रयोग में की गयी प्रगति की सूचना राष्ट्रपति को देती है। राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिये, गृह मंत्रालय, हिन्दी में विभिन्न विषयों पर मौलिक लेखन के लियें इन्दिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार प्रदान करता है।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में, सार्वजनिक उपक्रमो में हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाता है। प्रेरणा प्रोत्साहन के लिये कार्यालयीन विषयो पर प्रतियोगितायें आयोजित की जाती है, पुरस्कार दिये जाते है, जिससे हिन्दी में कार्य रुचिपूर्वक अबाध गति से हो।

अब तो लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी अथवा अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय के रूप में चुना जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को मान्यता दिलाने के लिये हर संभव प्रयास किया जाता है। भाषा की

पराधीनता की पीड़ा को भारतीय प्रवासी अब हमसे भी अधिक समझनें लगे हैं। भाषा के मामले में सोचने समझने की प्रक्रिया विदेशों में बसे भारतीयों में प्रारम्भ हो गयी है। जिसका परिणाम शुभ ही होगा। भारत को भाषायी स्वतंत्रता की लड़ाई पूरे बल से लड़नी ही होगी, जिससे हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं का अधिक-से-अधिक विकास हो तथा राष्ट्रीय एकता व अखण्डता अक्षुण बनी रहे। मॉरीशिस, नेपाल, बर्मा, मलेशिया, अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी और इंडोनेशिया आदि में उच्च स्तर पर हिन्दी में शिक्षण शोध एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। विश्व परिप्रेक्ष्य में आशाजनक व उत्साहवर्धक स्थिति है।

राजभाषा हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वालों को राष्ट्रहित में हिन्दी में कार्य करना चाहिये। जो नहीं करते हैं, उन्हें प्रारम्भ कर देना चाहिये। हिन्दी के प्रति हीन भावना न आने दें, अपितु प्रेम, प्रेरणा, प्रोत्साहन, सहकार, सदिच्छा से हिन्दी में कार्य करने की महती कृपा करे, क्योंकि जब तक हम दैनिक जीवन में प्रयोग करके उचित सम्मान नहीं देंगे, तब तक पिछड़ते ही जायेंगे। कुछ लोगों को कठिनाईयाँ हो सकती है, किन्तु अनवरत प्रयास के विजय प्राप्त की जा सकती है। कहावत है– "करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।" रुचिपूर्वक व्यवहार में लाने पर कठिन से कठिन भाषा भी सरल हो जाती है। जो बोले, वही लिखें कार्य शुरु हो गया। एक डग उठाने पर, दूसरा उठेगा ही। हर यात्रा एक कदम से ही शुरू होती है और व्यक्ति गन्तव्य पर पहुँचता है।

राजभाषा हिन्दी – विकास में बाधक तत्त्व

1. सरकारी इच्छाशक्ति का अभाव
2. राष्ट्रीय भावना की कमी
3. कौन्वेन्ट विद्यालयों की भरमार
4. सूचना प्रौद्योगिकी के नाम पर अंग्रेजी-शिक्षण का ढ़ोल पीटना
5. भाषा को रोज़गार से न जोड़ना
6. भाषा की राजनीति करना, प्रादेशिक भावनायें उभारना

प्रसन्नता की बात है कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री सर्वत्र हिन्दी में ही भाषण करते है। इससे हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ रही है तथा सर्वग्राह्य भी बन रही है। विदेशों में अनेक विश्वविद्यालयों मे हिन्दी पढ़ायी जाती है तथा बड़े पैमाने पर शोध कार्य भी हो रहा है। देवनागरी लिपि वैज्ञानिक होने के कारण, सहन ही ग्राह्य हो जाती है। भाषा बोलने, लिखने तथा व्यवहार करने से समृद्ध होती है, तथा भाषा का ज्ञान अपने आप हो जाता है।

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।

इंसान का नजरिया

वजीर सिहँ

एक समय की बात है कि एक फौजी की नियुक्ति देश की सरहद की रक्षा के लिये उजाड़-बियाबां रेगिस्तानी इलाके में हो गई। अब उसके साथ-साथ उसकी धर्मपत्नी को ना चाहते हुए भी रहने के लिये वही जाना पडा। जहाँ बस्ती के नाम पर सेना की एक कोलोनी थी, जिसमे अधिकतर घरों में ताले ही लगे रहते क्योंकि एक तो किसी की भी ड्यटूी का टाईम फिक्स नहीं था और दूसरा वहाँ कम लोग ही अपने परिवार के साथ रहते थे। जो थोड़े बहुत परिवार वहाँ थे उनकी कंपनी उसे अच्छी नहीं लगती थी क्योंकि वो तो ठहरी शहर की आधुनिक नारी और एक रौबदार ज़ेलर की पुत्री। वह उन्हें बहुत पिछड़ा और गँवार समझती थी।

एक कमरे के छोटे से मकान में बेचारी जैसे-तैसे अकेले ही गुजारा करने लगी। पूरा दिन गर्म हवाओं के थपेड़े लगते और रात को जरूरत से ज्यादा ठण्ड हो जाती। फौजी भाई तो रोज कभी सुबह - कभी शाम डयूटी पर रहते और उसकी पत्नी प्रतिदिन अपने भाग्य को कोसती रहती और सोचती कि क्या इस रेत में धक्के खाने के लिये ही मैंने इतनी पढ़ाई की थी, क्या इस नरक में भेजने से पहले मेरे पिता ने मेरे बारे में तनिक भी नहीं सोचा।

एक दिन दु:खी होकर उसने अपने पिता को ख़त लिखा कि अब उससे बर्दाश्त नहीं होता और वह सब कुछ छोड़कर उसके मायके आना चाहती है ताकि अपने उन्मुक्त विचारों के साथ पूरी आज़ादी और आधुनिकता के साथ अपना जीवन जी सके। उसने लिखा, "पिताजी, इस जेल में रहने से अच्छा है कि मैं आपकी जेल में रहूँ।"

उसके खत का जवाब देते हुए उसके पिता ने लिखा, "एक दिन दो कैदियों ने एक साथ जेल से बाहर देखा। एक ने ऊँचे आसमान में चमचमाते तारे देखे और दूसरे ने जमीन पर फैला गन्दा कीचड़।"

जेलर पिता का जवाब पढ़कर वह सोच में पड़ गई, उसे लगा कि पिता ने ठीक ही लिखा है। उसे महसूस हुआ कि ये दुनिया इतनी बुरी भी नहीं है। धीरे-धीरे उसने आसपास की महिलाओं और स्थानीय लोगो से मेल-जोल बनाना शुरू कर दिया और शुरुआत हुई एक नए युग की - आधुनिक और पारम्परिक मेलजोल के माहौल की। सुबह के उगते सूरज की ऊष्मा और शाम के डूबते सूरज की ठंडी शालीनता अब उसे महसूस होने लगी थी और साथ ही महसूस होने लगा था इंसान की सोच में बदलाव का फर्क।

जीवन

प्रदीप मधेशिया

कहीं खिली है धूप खुशी की
कहीं घिरे हैं गम के बादल,
दो रंग रूप ये जीवन के,
चलता रहता इनका क्रम।

लाये एक जीवन में बहार,
दूजा दे पतझड़ की मार,
जीवन के हैं ये खट्टे मीठे अनुभव,
बने रहे जीवन में नितरा।

जीवन हैं एक कश्ती,
करना है जिससे भवसागर पार,
कहीं डूबे तो कहीं उतराये,
कहीं जीवन इसमें समाये।

खेवा है जो जीवन रूपी कश्ती,
कर सच्चे मन प्रभु साकार,
बढ़ता जाता बस मंजिल की ओर,
नही डूबे वो फिर कहीं और।

नारी जीवन में शिक्षा का महत्व

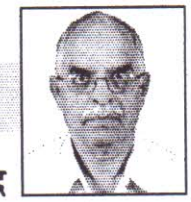

हरि गोविन्द

प्राचीन काल से ही समाज में भारतीय नारी को देवी तथा गृह-लक्ष्मी जैसे विविध उपनाम दिये गये हैं। ऐसा भी बताया गया कि जहाँ नारी का आदर होता है, वहाँ देवताओं का स्थान होता है।

आधुनिक समय में सरकार ने "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" योजना द्वारा नारी जीवन में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया है। परिवार स्त्री और पुरूष दोनों से बनता है। अतः नारी यदि शिक्षित है, तो वह आर्थिक रूप से पति और परिवार की सहायता करती है। साथ ही, बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाकर उनको सुशील बनाती है, जिससे वे अच्छे और ईमानदार नागरिक बनते हैं और देश सेवा करते हैं।

आधुनिक भारतीय नारी घरेलू कामों के साथ जीवन के हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ काम कर आत्म-निर्भर बनकर परिवार की सहायता के साथ-साथ देश सेवा करती है।

आज शिक्षित नारी का समाज के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। आज पढ़ी-लिखी पत्नी पति के कामों में हाथ बंटा सकती है और आत्मविश्वास के साथ अपने बच्चों का लालन-पालन भी सही तरीके से कर सकती है। इस तरह नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग बनती है। एक शिक्षित नारी अपने परिवार के साथ-साथ समाज और देश को गौरवमय बनाती है। आईये, हम सब नारी को शिक्षित कर उसका सम्मान करें और यशस्वी देश के निर्माण में जुट जायें।

सच्ची खुशी

रीतू सिंह

हरियाणा राज्य के पानीपत जिले के एक छोटे से गाँव में किसान रहता था, रामदीन, जो गेहूँ उगाता था। उसे पिछले चार सालों से हर साल सबसे अच्छा गेहूँ उगाने वाले किसान का पुरस्कार मिलता था। जिसके कारण उसकी प्रसिद्धि फैलने लगी और पिछले साल एक बड़े प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र का रिपोर्टर उसका इंटरव्यू लेने उसके गाँव पहुँचा। जब रिपोर्टर ने रामदीन से इतना अच्छा गेहूँ उगाने का राज पूछा, तो रामदीन बोला कि जिन बीजों से वह इतना अच्छा गेहूँ उगाता है, उस बीज को वह अपने आस-पास के किसान भाईयों में भी बाँटता है।

रिपोर्टर को जब यह बात पता लगी तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अनुभवी और दुनिया के व्यवहार का अखंड विद्वान होने का अहसास करते हुए पूछा, "रामदीन तुम्हारे सबसे उन्नत बीजों के कारण ही तो तुम्हे पिछले कई सालों से यह पुरस्कार मिलता है फिर उन्ही बीजों को दूसरे किसानों में बाँटना भला कैसी समझदारी है।"

रामदीन ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "रिपोर्टर साहब, लगता है कि आपको प्रकृति की व्यवहारिकता और मानवीय व्यवहार की आधारभूत जानकारी नहीं है। जैसे हवा अपने बहाव के साथे पके हुए गेहूँ के पराग कणों को आस-पास के सभी खेतों में ले जाती है वैसे ही हवा मेरे आस-पास के खेतों के खराब गेहूँ के पराग कणों को मेरे खेत में भी ला सकती है। अतः मैं उनका भला करने के साथ-साथ अपने भविष्य के लिये भी सावधानी रखता हूँ।"

ऐसा ही कुछ अनुभव जिंदगी के साथ भी है। सदैव सुख और शांति चाहने वाले लोगों को अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों की सुख-शांति का भी ख्याल रखना चाहिए क्योंकि किसी भी जीवन की सार्थकता की कीमत इस बात से आंकी जाती है कि वह जीवन कितने लोगों के जीवन को छूता है। यदि हमें खुश रहना है तो चारों तरफ खुशियाँ बिखेरनी चाहिये।

आरक्षण वरदान या अभिशाप

हंसराज

भारत 1947 में आज़ाद हुआ, उस समय भारत में कुछ जातियाँ अस्पृश्यता का डंक झेल रही थी, इसलिए इन दलित वर्गों की पहचान आसान काम नहीं था। उस समय महात्मा गाँधी ने उनका दुःख समझा तथा उनको बराबर का दर्जा दिलाने के लिए इन्हे 'हरिजन' नाम से सम्बोधित किया। महात्मा गाँधी के इस अभियान को आगे बढाने तथा पिछड़े लोगों को समाज में सम्मान दिलाने के लिए उस समय के कुछ वरिष्ठ राजनेताओं और समाज सेवियो ने दलितों को राजनीति, शिक्षा तथा सरकारी नौकरी में इनकी संख्या के समानुपातिक आरक्षण प्रदान किया।

राजनीति में इन जातियों के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने के लिए अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए 10 वर्ष तक अलग से निर्वाचन क्षेत्र आबंहित किए गए। यदि बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर का असमय निधन न होता तो यह आरक्षण 1967 में ही समाप्त हो जाता, लेकिन अब यह प्रत्येक दस वर्ष के पश्चात अगले दस वर्ष के लिए बढा दिया जाता है। जबकि इस समय इस आरक्षण का अधिकांश लाभ जरूरतमंद को न मिलकर, कुछ समृद्ध घरानों-व्यक्ति को ही मिल रहा है। दूसरी और शैक्षणिक क्षेत्र में आरक्षण से यह हालात बन गए हैं, कि एक आरक्षणरहित जाति का 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक पाने वाला छात्र, आरक्षित जाति के कम प्रतिशत पाने वाले छात्र से पिछड़ रहा है। जिस कारण आरक्षणरहित जाति के छात्रों का मन कुंठित हो जाता है। पद्दोन्नति में भी आरक्षण दिया जाता है, जिस कारण अधीनस्थ कर्मचारी आरक्षण के लाभ पर अपने अधिकारी का बॉस बन जाता है। जिससे अनारक्षित कोटे के अधिकारी के मन में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है। जिस कारण आरक्षित तथा अनारक्षित वर्गों के मध्य एक दरार सी उत्पन्न हो गयी है।

अब यह आरक्षण, आवश्यकता के स्थान पर अधिकार बन गया है। जिस कारण कुछ जातियों द्वारा आरक्षण कोटे में स्थान न मिलने के कारण, उनके द्वारा सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान भी पहुंचाया जाता है। जो कि देश के लिए बहुत घातक है।

इसीलिए अब सरकार को आरक्षण के विषय पर पुनः विचार करके इसमें संशोधन करना चाहिए, ताकि सही और ज़रूरतमंद व्यक्ति को इसका लाभ मिल सके।

आरक्षण का मूल उद्देश्य केवल देश की प्रगति होना चाहिए।

एक बार फिर

मल्लिका मुखर्जी

जिन्हें बचाने बनी मैं काठ का टुकड़ा,
उन्हीं लोगों ने
अपने स्वार्थ की धूप में सूखाकर
मुझे बनाया इस काबिल कि
झोंक सके अपनी सुविधाओं के अलाव में
समयानुसार, बार-बार
और निकल जाए मुझसे कहीं आगे
होकर मेरी ही ऊष्मा पर सवार।
परिवर्तित हो चुकी हूँ मैं राख में,
पर आसमान को छूने की आस
कहीं पंख फडफड़ा रही है
मेरे भीतर चिनगारी बनकर।
कोई मसीहा बन आए
शीतल जल छिड़ककर
बुझा दे उस चिनगारी को,
नमी पाकर
उम्मीद की एक हरी कोंपल के संग
फिर मुस्कुरा उठे मेरा सूखा अस्तित्व !
देख पाऊँ मैं आसमाँ की ओर
नज़र उठाकर एक बार फिर !

आरोहण २०१३-१४ का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि महोदया एवं प्रधान महालेखाकार महोदय।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित कार्यालय सदस्यगण।

मंच पर व्याख्यान देती हुई मल्लिका मुखर्जी

स्वास्थ्य जाँच कार्यक्रम में लाभान्वित होते हुए सदस्यगण।

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस की झलकियाँ

सेवानिवृति समारोह का संचालन करती हुई सरिता मानके

सेवानिवृति समारोह का दृश्य

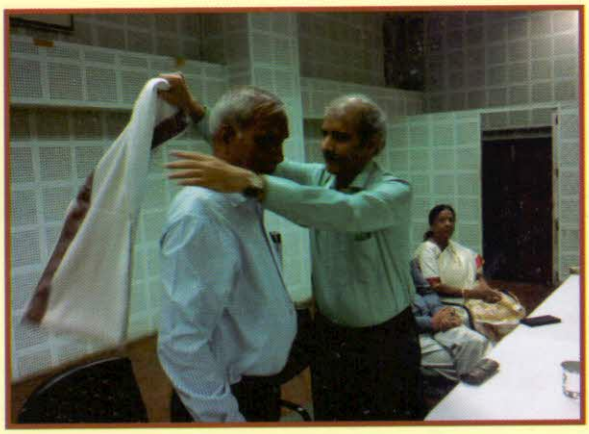

सेवानिवृत हो रहे कार्यालय सदस्य का सम्मान करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय।

सेवानिवृत हो रहे सदस्य का स्वागत करते हुए एम.जी.कंठ

कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए बालमुकुन्द त्रिपाठी

राहत सामग्री का वितरण करते हुए कल्याण अधिकारी

हिन्दी पखवाड़े में उपस्थित सदस्यगण

हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रधान निदेशक एवं मुख्य अतिथि से अचल शील्ड प्राप्त करते हुए आ.क्षे. I मु. II के अधिकारीगण

हिन्दी पखवाड़े के दौरान मंचासीन निर्णायकगण

पोस्टर प्रतियोगिता की झलकी

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में उपस्थित सदस्यगण

प्रधान निदेशक को अपनी पुस्तक भेंट करती हुई मुख्य अतिथि महोदया

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में मंचासीन मुख्य अतिथि, प्रधान निदेशक एवं व.उ.म.ले.(प्रशा.)

मुख्य अतिथि महोदया का स्वागत करते हुए प्रधान निदेशक एवं व.उ.म.ले. (प्रशा.)

पुरस्कार वितरण करती हुई मुख्य अतिथि महोदया।

पोस्टर प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए उप महालेखाकार एवं उप निदेशक

पोस्टर प्रतियोगिता के झरोखे से

प्रेम का पाठ

रीतू सिँह

एक बार सिक्ख गुरु श्री नानक देव जी महाराज किसी गाँव में उपदेश देने पहुँचे। अगली सुबह जब वे गाँव वासियों को उपदेश देने के लिये बैठे तो गाँव के एक आदमी ने उनसे कहा, "मैं इस स्वार्थी और लालची दुनिया में रहना नहीं चाहता, मैं भगवान को पाना चाहता हूँ।" उसकी बात सुनकर गुरु नानक देव ने मुस्कुराते हुए पूछा, "तुमने कभी किसी व्यक्ति या जीव से प्रेम किया है।" उसने कहा, "मैं कभी इस झंझट में नहीं पड़ा हूँ, मुझे तो बस परमात्मा को पाना है।" गुरु नानक देव ने पूछा, "क्या तुम कभी इस झंझट में ही नहीं पड़े ?"

उसने कहा, "मैं आपसे बिलकुल सच कह रहा हूँ।"

गुरु नानक देव ने फिर पूछा, "इतने बड़े जीवन में आज तक कभी तो तुम्हे किसी जीव, पशु-पक्षी, किसी स्त्री या अपनी पत्नी या औलाद या अपने माता-पिता से तो प्रेम हुआ होगा।"

उसने कहा, "क्षमा कीजिये महाराज, मैं आपसे परमात्मा मिलन का रहस्य पूछ रहा हूँ और आप मुझे बार-बार इस मायावी संसार और इसके चंगुल में उलझाने का प्रयास कर रहे हैं।"

गुरु नानक देव ने हँसते हुए कहा, "अगर तुम जो कह रहे हो वही सत्य है तो फिर मुझे माफ करो और किसी और व्यक्ति को अपना गुरु बनाओं क्योंकि मेरा अनुभव तो यही कहता है कि अगर तुमने कभी भी किसी से भी प्रेम किया होता, तो उस प्रेम के दायरे को बढ़ाकर तुम परमात्मा तक पहुँच सकते थे। लेकिन तुम्हारे पास तो वो बीज ही नहीं है जो पेड़ बन सके। प्रेम में ही परमात्मा का वास है।"

महाराणा प्रंतापसिंह

हितेश लिम्बाचिया
पुत्र कनुभाई लिम्बाचिया

9 मई, 1540 ई. की वह तिथि धन्य है, जब मेवाड़ की शौर्य-भूमि पर मेवाड़-मुकुटमणि राणा प्रताप का जन्म हुआ। पिता - श्री महाराणा उदयसिंह जी और माता - राणी जीवत कँवर जी के घर जन्मे राजपूत शिरोमणि महाराणा प्रतापसिंह उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। उनका शासन काल – 1568 ई. से 1597 ई. तक 29 वर्ष का रहा। महाराणा का नाम इतिहास में वीरता और दृढ़ प्रण के लिये अमर है।

महाराणा प्रताप के बारे में कुछ रोचक जानकारी :

1. महाराणा प्रताप का वजन 110 किलो और लम्बाई 7'5" थी, दो म्यान वाली तलवार और 80 किलो का भाला हाथ में रखते थे।
2. महाराणा प्रताप के भाले का वजन 80 किलोग्राम था और कवच का वजन भी 80 किलोग्राम ही था। कवच, भाला, ढाल और हाथ में तलवार का वजन मिलाएं तो कुल वजन 207 किलो था।
3. आज भी महाराणा प्रताप की तलवार, कवच आदि सामान उदयपुर राज घराने के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।
4. महाराणा प्रताप एक ही झटके में घोड़े समेत दुश्मन सैनिक को काट डालते थे।
5. हल्दी घाटी की लड़ाई में मेवाड़ से 20000 सैनिक थे और अकबर की ओर से 85000 सैनिक युद्ध में सम्मिलित हुए।
6. अकबर ने कहा था कि अगर राणा प्रताप मेरे सामने झुकते है तो आधे हिंदुस्तान के वारिस वो होंगे पर बादशाहत अकबर की ही रहेगी। लेकिन महाराणा प्रताप ने किसी की भी अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया।
7. महाराणा प्रताप सिंह जी के पास एक सबसे प्रिय घोड़ा था, जिसका नाम चेतक था। चेतक बहुत ताकतवर था। चेतक महाराणा को 26 फीट का दरिया पार करवाने के बाद वीर गति को प्राप्त हुआ। उसकी एक टांग टूटने के बाद भी वह दरिया पार कर गया। जहाँ वो घायल हुआ वहां आज खोड़ी इमली नाम का पेड़ है। जहाँ पर चेतक की मृत्यु हुई वहाँ हल्दी घाटी में आज भी चेतक मंदिर सुरक्षित है।
8. मेवाड़ के आदिवासी भील समाज ने हल्दी घाटी में अकबर की फौज को अपने तीरों से रौंद डाला था वो महाराणा प्रताप को अपना बेटा मानते थे और राणा बिना भेदभाव के उन के साथ रहते थे। आज भी मेवाड़ के राजचिन्ह पर एक तरफ राजपूत हैं तो दूसरी तरफ भील।

9 मरने से पहले महाराणा प्रताप ने अपना खोया हुआ 85% मेवाड़ फिर से जीत लिया था। सोने-चाँदी और महलों को छोड़कर वो 20 साल मेवाड़ के जंगलो में घूमे।

10. महाराणा प्रताप ने जब महलों का त्याग किया तब उनके साथ लुहार जाति के हजारों लोगों ने भी घर छोड़ा और दिन रात राणा की फौज के लिए तलवारें बनाईं। इसी समाज को आज गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान में गाढ़िया लोहार कहा जाता है। मैं नमन करता हूँ ऐसे लोगो को।

11. हल्दी घाटी के युद्ध के 300 साल बाद भी वहाँ जमीनों में तलवारें पाई गई। आखिरी बार तलवारों का जखीरा 1985 में हल्दी घाटी में मिला था।

12. आप सब ने महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक के बारे में तो सुना ही होगा, लेकिन उनका एक हाथी भी था। जिसका नाम था रामप्रसाद। उसके बारे में आपको कुछ बाते बताता हूँ। रामप्रसाद हाथी का उल्लेख अल-बदायूँनी, जो मुगलों की ओर से हल्दीघाटी के युद्ध में लड़ा था, ने अपने एक ग्रन्थ में किया है। वो लिखता है कि जब महाराणा प्रताप पर अकबर ने चढ़ाई की थी तब उसने दो चीजों को ही बंदी बनाने की मांग की थी एक तो खुद महाराणा और दूसरा उनका हाथी रामप्रसाद। आगे अल बदायूँनी लिखता है कि वो हाथी इतना समझदार व ताकतवर था कि उसने हल्दीघाटी के युद्ध में अकेले ही अकबर के 13 हाथियों को मार गिराया था। वो आगे लिखता है कि उस हाथी को पकड़ने के लिए हमने 7 बड़े हाथियों का एक चक्रव्यूह बनाया और उन पर 14 महावतों को बिठाया तब कहीं जाकर उसे बंदी बना पाये। अब सुनिए एक भारतीय जानवर की स्वामी भक्ति। उस हाथी को अकबर के समक्ष पेश किया गया जहाँ अकबर ने उसका नाम पीरप्रसाद रखा। रामप्रसाद को मुगलों ने गन्ने और पानी दिया। पर उस स्वामिभक्त हाथी ने 18 दिन तक मुगलों का न तो दाना खाया और न ही पानी पीया और वो शहीद हो गया। तब अकबर ने कहा था कि जिसके हाथी को मैं अपने सामने नहीं झुका पाया उस महाराणा प्रताप को क्या झुका पाउँगा। ऐसे ऐसे देशभक्त चेतक व रामप्रसाद जैसे तो यहाँ जानवर थे।

13. महाराणा के देहांत पर अकबर भी रो पड़ा था।

14. जब अब्राहम लिंकन भारत दौरे पर आ रहे थे तब उन्होंने अपनी माँ ने पूछा कि हिंदुस्तान से आपके लिए क्या लेकर आए। तब माँ का जवाब मिला- "उस महान देश की वीर भूमि हल्दी घाटी से एक मुठ्ठी धूल लेकर आना जहाँ का राजा अपनी प्रजा के प्रति इतना वफादार था कि उसने आधे हिंदुस्तान के बदले अपनी मातृभूमि को चुना" लेकिन बदकिस्मती से उनका वो दौरा रद्द हो गया था। बुक ऑफ प्रेसिडेट यू एस ए किताब में आप यह बात पढ़ सकते हैं।

(संकलित)

दान (लघु कथा)

कविता सिंह

आज सुबह से ही उमस और गर्मी बहुत थी। मैं जल्दी - जल्दी तैयार होकर ऑफिस जाने के लिए बसस्टैंड की तरफ निकल पड़ी। जैसे ही बस आयी, मैं अन्दर सीट पर बैठ गई। अभी बस थोड़ी ही दूर गयी थी कि रेड लाईट का सिग्नल हो गया। बस जैसे ही रुकी मैं शीशे से बाहर देखने लगी।

तभी मेरी नज़र सडक के उस पार भीड़ की तरफ गयी। मैंने देखा, वहाँ दो छोटे बच्चे, जिनकी उम्र मात्र ८ से १० साल तक होगी , वो दोनों बच्चे करतब दिखा रहे थे। उस उमस भरी गर्मी में कभी पतली रस्सी पर चढ़कर तो कभी रिंग में घुसकर। करतब खत्म होने के बाद उनमें से एक लड़का जिसके हाथ में एक पत्र था, जिसमें लिखा था - "माँ के इलाज हेतु", आर्थिक मदद करने की अपील कर रहे थे हमारी बस मात्र पाँच मिनट रुकी पर उस बच्चे ने दौड़ कर सड़क पार की और बस के शीशों की तरफ आकर पैसे माँगने लगा। किसी ने भी उसे पैसे नहीं दिये और अपना मुँह दूसरी तरफ कर लिया। पीछे से एक आदमी, जिसने साधु का वेष धारण किया था, बस में चढ़ा। उसके हाथ में एक शनिदेव की फोटो और दूसरे हाथ में दान पात्र था। वह सबके पास जाकर बोलता, "शनिदेव की जय हो ! शनिदेव की कृपा रहेगी तथा समस्त परेशानी शनिदेव की कृपा से दूर हो जायेगी। दान कर बच्चा।"

और तब मैं यह देखकर हैरान रह गयी कि आधे से ज्यादा लोगों ने बड़ी ही श्रद्धा से दान किया और मात्र ५ से १० मिनट में उसका दान पात्र पैसों से भर चुका था।

आवाहन

मल्लिका मुखर्जी

कौन सी लोरी सुनाऊँ तुम्हें,
मेरी प्यारी बिटिया रानी ?
जाने भी दो, आज मन नहीं है गाने का।
कुछ और सुनाती हूँ,
एक पते की बात बताऊँ ?
कर्ज बड़ा भारी है हम पर,
नानी का, दादी का, माँ का और मौसी का,
बुआ, मामी और चाची का भी।

रिवाजों की आग में
जलकर ख़ाक हुए हैं जिनके सपने।
मिट चुकी है जिन की हथेलियों की रेखाएँ
चौका बरतन, झाड़ू-पोंछे की दौड़ में।
फटी एड़ियों का दर्द सहते-सहते
सूखा लिए हैं जिन्होंने अपने आँसू
घूँघट की आड़ में।
सिकुड़ गया है जिन का अस्तित्व
और जिन्होंने
नारी होने की सजा भुगती है आजीवन।
मेरी लाड़ली बिटियारानी
कर्ज बड़ा भारी है हम पर।
इसीलिए मेरी कोख में ही
पूर्णतया सुरक्षित कर लिया था मैंने तुम्हें।
जिंदगी है हक़ की लड़ाई,
शिक्षा दूंगी मैं तुम्हें।
आग्नेयास्त्र बन लड़ेंगे हम
उस अन्याय के खिलाफ़
जो सदियों से होता आया है नारी के साथ।

एक बार फिर
उजागर करेंगे उस सत्य को-
पुरुष है परिवार का कर्ता तो
नारी है परिवार की धरोहर।
काल के खंडहर में छिपी
उस सभ्यता को ढूंढ निकालेंगे
जिस में नारी है श्रेष्ठ।
उखाड़ फेंकेंगे अपनी जमीं से उन जडों को
जिसने खोखली क़र दी है
हमारे अस्तित्व की बुनियाद !
तब्दील होंगी हमारी यह मुहिम
एक ऐसे कारवाँ में कि
चलेंगी दिशाएँ हमारे साथ,
बहेंगी हवाएँ हमारे संग।
हम रचाएँगे एक नया आसमान
इस ध्वस्त समाज व्यवस्था को
देंगे एक नया आयाम !

मेरी प्यारी राजदुलारी
किश्तों में ही सही
उतार ही देंगे एक दिन
यह कर्ज जो हम पर है,
उतार ही देंगे।

तृष्णा का स्वरूप

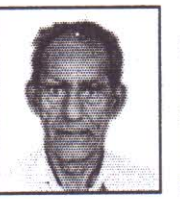

रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र

सर्व संसार दुःखनां तृष्णैका दीर्घायुः खदा।
अन्तः पुरस्थामपि या योजयत्यति संकटे ॥

जितने भी दुःख है जगत में, उन सब में तृष्णा सर्वाधिक दुःखदायिनी है। जो कभी घर के बाहर नहीं निकलते, तृष्णा उन्हे भी बड़े संकट में डाल देती है।

भीषयत्यपि धीरं अमन्धयत्यपि सेक्षणम्।
खेदयत्दपि सानंद तृष्णा कृष्णेव शर्वरी ॥

तृष्णा घोर अन्धकारमयी कालरात्रि की तरह है। धीर पुरुष को भी भयभीत कर देती है। आँखो वाले को भी अंधा बना देती है और सानंद शान्त को भी खेदयुक्त कर देती है।

तृष्णा का शब्दिक अर्थ कामना, इच्छा, लालसा, वासना तथा लोभ इत्यादि होते हैं। लोभ सर्वाधिक उपयुक्त शब्द तृष्णा के लिये जान पड़ता है। तृष्णा के कारण ही मनुष्य इतना अपमान, लज्जा तथा दुःख सहन करता है। एक दुःख के बाद दूसरा दुःख आने में तृष्णा ही मुख्य कारण होती है। दुःख की निरंतता बनी रहती है। वह कभी दूरती नहीं है। मनुष्य को किसी भी दशा में संतोष नहीं होता। तृष्णा के कारण, भागते - भटकते उम्र बीत जाती है, परंतु तृष्णा का अंत नहीं आता। वह दुःखी का दुःखी तथा अतृप्त का अतृप्त बना रहता है। अन्त में हाथ मलते हुये पछताने से भी कोई लाभ नहीं होता।

व्यक्ति के पास जब कुछ नहीं होता तो वह चाहता है कि हजार रुपये हो जायें, हजार से लाख, लाख से करोड़, करोड़ से अरब की इच्छा होती है। राजा का पद, इन्द्र का पद, फिर ब्रह्मा का पद, तत्पश्चात विष्णु पद की कामना होती है। इस प्रकार, उत्तरोत्तर तृष्णा बढ़ती जाती है। किन्तु उसका छोर नहीं आता।

मुझे किसी ने एक बार बताया कि वह निर्धन था तो सोचता था कि हजार रुपये हो जायें तो भगवद्भजन करेगा। आज उसके पास करोड़ों की सम्पत्ति है तथा वृद्धावस्था भी आ गयी है किन्तु धन की तृष्णा अभी तक बनी हुई है। यही तृष्णा का स्वरूप है। वह कभी तृप्त नहीं होती। तृष्णा को तृप्त करने से अतृप्ति बढ़ती है।

मनुष्य का यौवन बीत जाता है, वृद्धावस्था आ जाती है। शरीर शिथिल हो जाता है। इन्द्रियों की शक्ति क्षीण हो जाती है। किन्तु तृष्णा युवती की युवती बनी रहती है। भ्रतृहरि का भी ऐसा ही मत है। बुद्धिमान

मनुष्य को भोगों की तृष्णा से मुँह मोड़कर परमात्मा के लिये प्यास जगानी चाहिये। भोगों से कभी तृप्ति नहीं होती बुझे न काम अग्नि तुलसी कहुँ विषय - भोग बहु छीते अग्नि में घी डालने से अग्नि धधकती है, वैसे भी तृष्णा को तृप्त करने से और भी बलवती बनती है तृष्णा। यही कामना तृष्णा का स्वरूप है। अगर तृष्णा की अग्नि को बुझाना है तो संतोषरूपी शीतल जल डालिये। संतोष-धन ही यथार्थ धन है, जिससे मनुष्य को सुख मिलता है। संतोष परम धन है।

गोधन गजधन वाजिधन और रतन धन खान
जो पावै संतोष धन, सब धन धूरी समान

ऐसे बहुत-से व्यक्ति हैं जिन्होंने अकृत धन अर्जित एकत्रित किया है तथापि अतृप्ति की ज्वाला में हर समय जलते रहते हैं। उन्हें शान्ति नहीं मिलती। अशान्तस्य कृतः सुखष्य (गीता ३/६६)

धन अर्जित करने और उसका सदुपयोग करने की मनाही कही नहीं है, परन्तु धन के लोभ में उन्मत्त होने की आवश्यकता नहीं है। धन में बड़ी मादकता होती है। धन का मद सबसे बड़ा मद है। जब यह मद मानव पर सवार हो जाता है तब वह उसे अंधा बना देता है। वह अपने तुल्य किसी को बुद्धिमान नहीं मानता। वे लोग धन्य हैं जिनके पास धन है तथा वे विनम्र एवं मदहीन है ऐसे व्यक्ति संसार में विरले होते है। व्यक्ति धन कमावें किन्तु धन के मद में चूर न हों। धन का लोभ तथा धन का मद परमात्म-साधन में विक्षेप करता है। भगवद्भजन करने ही नहीं देता, यदि करने देता है तो उसका मद आड़े आ जाता है।

धन कमाना बुरी बात नहीं है। धन के बिना न गृहस्थी चलती है न मंदिर, मस्जिद व आश्रम बनते हैं। धार्मिक कार्य भी नहीं होते। तृष्णा के अनेक रुप है धन तो उनमें से एक है। तृष्णा अगर हो तो भगवान से। भगवान से तृष्णा होने पर तीनों प्रकार के पापो का नाश सदा-सदा के लिये हो जाता है। भागवत-तृष्णा उन्ही को प्राप्त होती है जो मार्गो को आपात रमणीय समझकर विषवत त्याग कर देते है, जब भगवत तृष्णा बढ़ जाती है तो भगवान को अपने प्यारे भक्तो को अपनी सौंदर्य सुधा पिलाकर सदा सर्वदा के लिये तृप्त संतुष्ट करना ही पड़ता है। उसकी समस्त ज्वालायें शान्त हो जाती है। अविद्या की बेड़ियाँ टूट जाती है। कर्मो के बन्धन खुल जाते है। अज्ञान की मोह-निशा ज्ञान की शरद पूर्णमा के प्रकाश में परिवर्तित हो जाती है। भाषा का सारा व्यापार उसके लिये समाप्त हो जाता है। उसे सर्वत्र परमात्मा का अज्ञान विस्तार देखने लगता है। उस परम तृप्त मन के लिये कोई कर्तव्य शेष नहीं रहता।३६

माँ

हंसराज

प्यारी माँ मुझको तेरी दुआ चाहिए,
तेरे आचंल की ठंडी हवा चाहिए ।

लोरी गा-गाकर मुझको सुलाती है तू,
मुस्कुराकर सवेरे जगाती है तू ।

मुझे इसके सिवाय और क्या चाहिए,
प्यारी माँ मुझको तेरी दुआ चाहिए ।

तेरे ममता के साये में फलूँ-फूलूँ
थामकर तेरी अंगुलि मैं बढ़ता चलूँ ।

तेरे दम से है, दुनिया में अज़मत मेरी,
तेरे कदमों के नीचे है, जन्नत मेरी ।

सर पर साया तेरा उम्र भर चाहिए,
प्यारी माँ मुझको तेरी दुआ चाहिए,
तेरे आचंल की ठंडी हवा चाहिए ।

(संकलित कविता)

युवा पीढ़ी के लिए अनुशासन का महत्व

छत्रपाल सिंह राठौर

आज का युवा वर्ग अनुशासन हीनता एवं आत्मविश्वास की कमी का शिकार है। वे दूसरों से तो अनुशासन की अपेक्षा करते हैं, किन्तु स्वयं को अनुशासित नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप, उनमें धीरे धीरे आत्मविश्वास की कमी होती जाती है और वे असफलता की और बढ़ते जाते हैं। आज सफलता के लिए आत्मविश्वास का होना अति आवश्यक है और आत्मविश्वास की प्राप्ति के लिए अनुशासन का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

अनुशासन हमेशा से सफलता का मूलमंत्र रहा है। जो व्यक्ति अनुशासित नहीं होता अथवा जिसका अपने पर काबू नहीं रहता, वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो पाता। अनुशासन का अर्थ है, समय का पाबंद होना या अपने काम के प्रति पूरी तरह समर्पित होना एवं हमेशा काम को सलीके से करना। युवा वर्ग के सामने आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह या तो काम समय से पहले ही कर देगा या समय के बाद करेगा। दोनों ही स्थितियाँ गलत है। दफ्तर में हमेशा देर से पहुँचना, अनुभाग में उपस्थित न रहना, कैन्टीन में शोर करना, अधिकारियों का आदर न करना व अपने कार्यों के प्रति गंभीर न रहना युवाओं के लिए आम बात हो गई है। टोके जाने पर वे अकसर कोई-न-कोई बहाना बना कर बात को टाल जाते हैं। दफ्तर में काम के वक्त फोन पर चिपके रहना, अपनी सीट छोड़ कर दूसरों के पास जा कर गप्पें लड़ाना आज आम बात हो गई है।

ऐसी स्थिति में, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आखिर अनुशासित होने के लिए क्या किया जाए। इसलिए युवाओं को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सदा अपने गुणों का अधिक से अधिक विकास करें, परंतु अवगुणो पर भी अंकुश रखें और अवगुणों पर अंकुश केवल अनुशासन द्वारा ही संभव है क्योंकि अनुशासन का दूसरा नाम साधना, तपस्या है। अनुशासन का पालन करना थोड़ा कठिन अवश्य है, परंतु मानव जीवन के लिए सफलता का मुख्य मार्ग यही है।

अर्थ के सही अनुमान में ही सार्थकता है।

वजीर सिंह

हिमालय के किसी आश्रम में एक गुरु रहते थे जिनके सानिध्य में कई शिष्य शिक्षा ग्रहण करते थे। गुरुदेव प्रतिदिन सुबह हवन क्रिया के बाद अध्यापन करते और सभी छात्र मन लगाकर अध्ययन करे। गुरुदेव प्रतिदिन पढ़ाई के साथ-साथ उन्हें जीवन की व्यवहारिकता के बारे में भी बताते।

गुरुदेव कहते, "नारी नरक का द्वार है, उससे सदैव दूर रहना।"

कुछ दिनों के बाद गुरुजी अपने एक शिष्य के साथ घूमने निकले तो उन्होंने देखा कि नदी में पानी ज्यादा है और इसके किनारे एक नवयुवती खड़ी है जिसे नदी पार जाना है। उस युवती ने किशोर शिष्य से निवेदन किया कि उसे तैरना नहीं आता, अतः कृपया वह उसे अपने कंधे पर बैठा कर नदी पार करवा दे। परन्तु गुरु की नसीहतों और उस वक्त गुरु का उसके साथ ही होने के कारण उसने उस युवती के निवेदन को ठुकरा दिया और आगे बढ़कर नदी पार कर गया। उस युवती ने फिर वही निवेदन पीछे आ रहे गुरु से भी किया।

गुरु ने कुछ क्षण के लिये सोचा और फिर युवती को कंधे पर बैठाकर उन्होंने उसे नदी पार करा दी।

गुरु के इस व्यवहार ने उनके शिष्य को असमंजस में डाल दिया था। शिष्य को लगने लगा कि उसके गुरु की करनी और कथनी में कितना अंतर है। तीन-चार किलोमीटर चलने के बाद जब उससे रहा नहीं गया तो उसने गुरु से कहा, "आप तो कहते थे कि नारी नरक का द्वार है, उससे सदैव दूर रहना, फिर आपने उस युवती को छुआ भी और उसे कंधे पर बैठा कर नदी भी पार करवाई।"

गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैंने वो इसलिए कहा था ताकि तुम अपनी पढ़ाई और ब्रह्मचर्य के वक्त को स्वयं पर केंद्रित कर सको। उसका ये अर्थ नहीं था कि जरुरत पड़ने पर भी तुम किसी नारी की सहायता करने से मना कर दो। अब तुम ही देखो मैंने तो उसे नदी के उस पार से कंधे पर बैठाकर इस पार आते ही नदी किनारे उतार दिया था और तुम उसे नदी के इस पार से अपने कंधे पर बैठाकर यहाँ तक ले आये हो।"

शिष्य को अपनी भूल का अहसास हो गया था और उसे गुरु की बातों में छिपा अर्थ भी स्पष्ट नजर आ रहा था।

के शिष्य को
। शिष्य को
करनी और
। तीन-चार
ब उससे रहा
, "आप तो
ार है, उससे
स युवती को
कर नदी भी

हा, "मैंने वो
अपनी पढ़ाई
ं पर केंद्रित
ा कि जरुरत
की सहायता
ही देखो मैंने
पर बैठाकर
ार दिया था
अपने कंधे
ो।"

अहसास हो
में छिपा अर्थ

नक्षत्र अध्ययन

अजय शुक्ल

यदि कोई व्यक्ति नक्षत्रों का अध्ययन करता है तो उसे यह ज्ञान अवश्य हो जायेगा कि पृथ्वी पर घटित होने वाले व्यापार तुच्छ है।

- अजय शुक्ल

बहुत से लोगों को नक्षत्रो के बारे में जानने की इच्छा रहती है, ऐसे लोगों की सुविधा के लिए यह लेख प्रस्तुत है। नक्षत्रों का अध्ययन करने के लिए जरूरी नहीं है कि हमारे पास दूरबीन हो। प्रारंभ में छः महीने या साल भर तक खुली आँखों से ही अध्ययन करना चाहिए। दिन में आसमान सौंदर्यहीन होता है लेकिन रात्रि के आगमन और चमकते नक्षत्रों के पुनरागमन से अद्‌भुत एवं रहस्यमय ब्रह्मांड की आभा दृष्टिगोचर होती है। नक्षत्र दर्शन हेतु आकाश का मानचित्र अगर साथ हो तो नक्षत्रों की स्थिति जानने मे अत्यंत सरलता हो जाती है। मानचित्र के लिए कुछ निःशुल्क मोबाइल सॉफ्टवेयर हैं :

1. **स्टेलॉरियम (stellarium)**
2. **स्काई मैप (Sky map)**

कंप्यूटर और लैपटाप के लिए निम्न निःशुल्क सॉफ्टवेयर हैं :

1. **डबल्यू डबल्यू टेलिस्कोप (ww telescope)**
2. **स्टेलॉरियम (stellarium)**
3. **सेलेस्टिया (celestia)**

इसके अलावा आप गूगल पर सर्च करके नक्षत्र मानचित्र डाउनलोड कर सकते हैं। विकिपीडिया से भी मानचित्र मिल सकता है। नक्षत्रों की स्थिति स्थान (अक्षांश) के अनुसार परिवर्तित हो सकती है। हरिद्वार में रात्रि आकाश में नक्षत्रों की स्थिति रामेश्वरम में नक्षत्रों की स्थिति से कुछ भिन्न होगी। सॉफ्टवेयर में अपनी स्थिति को दर्ज कर के अपने स्थान विशेष के लिए मानचित्र को अनुकूलित कर सकते हैं। आकाशीय मानचित्र को इस तरह देखा जाता है जैसे कोई व्यक्ति लेटकर पढ़ता है। रात्रि के समय मानचित्र को लाल प्रकाश में (या मोबाईल को नाईट मोड में) देखने पर सुविधा होती है। दिशा जानने के लिए एक छोटा कम्पास पर्याप्त होता है।

नक्षत्र मण्डल – पुराने आकाशदर्शियों ने तारों के समूहों को अपनी कल्पना के अनुसार नाम दे दिया था। जिन नक्षत्र समूहों से जैसी

काल्पनिक आकृति बनती नजर आ रही थी उन्हें उसी के अनुसार वैसा ही नाम दे दिया। नक्षत्र मण्डल कुल 88 हैं, लेकिन हम यहाँ कुछ विशिष्ट नक्षत्र मंडलो पर चर्चा करेंगे।

शरद काल (दिसंबर, जनवरी, फरवरी) में दृष्टिगोचर होने वाले नक्षत्र मण्डल :-

कालपुरुष नक्षत्र मंडल (Orion) : आपने इस नक्षत्र मंडल को अवश्य देखा होगा लेकिन हो सकता है कि नाम से परिचित न हो। इस नक्षत्रमंडल को पहचानना सबसे सरल है। कालपुरुष के कंधे पर आर्द्रा नक्षत्र स्थित है। आर्द्रा एक लाल दानव तारा है और इसका व्यास सूर्य से 300-400 गुणा अधिक है। बाणराज (रिगेल) इसके पैर पर स्थित है। यह सूर्य से 60,000 गुणा प्रकाशमान है। तीन चमकदार नक्षत्रों से कालपुरुष की पेटी बनी हुई है। यह तीनों नक्षत्र एक सीध में हैं। मृगशिरा नक्षत्र (गामा ओराइओनिस) कालपुरुष के सिर पर स्थित है। मृगशिरा सूर्य से 9000 गुणा अधिक चमकदार है और इसके सतह का तापमान सूर्य के सतह से 6 गुणा अधिक है। कालपुरुष नक्षत्र मंडल में ग्रेट ओराइओन नेबुला (म 42) स्थित है। इसे छोटी दूरबीन से आसानी से देखा जा सकता है। यह कालपुरुष के तलवार पर हरे प्रकाशपुंज के रूप में दृष्टिगोचर होता है। यह गैस और धूल का विशालकाय बादल है, और इसमें नक्षत्रों का जन्म होता है। कालपुरुष नक्षत्रमंडल की सहायता से आप अन्य नक्षत्रमंडल को भी पहचान सकते है।

कैनीस मेजर नक्षत्रमंडल (Canis Major) : कालपुरुष की पेटी के तीनों नक्षत्रों के सहारे दक्षिण दिशा में बढ़ने पर महाश्वान नक्षत्रमंडल दृष्टिगोचर होता है। इस नक्षत्रमडंल का लुब्धक तारा आसमान का सबसे चमकीला तारा है। यह सूर्य के पश्चात् पृथ्वी से सबसे निकट का तारा है।

शशक (लेपस) नक्षत्रमंडल (Lepus) : यह नक्षत्रमंडल कालपुरुष के ठीक दक्षिण में अवस्थित है।

वृषभ नक्षत्रमंडल (Taurus) : वृषभ नक्षत्रमंडल कालपुरुष का पड़ोसी है। रोहिणी और कृतिका इस नक्षत्रमंडल के प्रमुख तारे हैं। कृतिका कोई एक तारा न होकर तारों का समूह है। कृतिका का सौंदर्य अनुपम है। वृषभ नक्षत्र मंडल में क्रैब नेबुला है। यह नेबुला सं. 1054 ईस्वी संवत में एक नक्षत्र में हुए सुपरनोवा विष्फोट के कारण बना है। यह नेबुला अंतरिक्ष में रेडियो किरणों का शक्तिशाली स्त्रोत है।

औरिगा नक्षत्रमंडल (Auriga) : यह नक्षत्रमंडल पञ्चकोण की आकृति का है, यह कालपुरुष के उत्तर दिशा में अवस्थित है। कैपेला इसका सबसे चमकदार नक्षत्र है।

मेष नक्षत्रमंडल (Aries) : यह कृतिका (एवं कालपुरुष) के पश्चिम में अवस्थित है। अश्विनी इसका प्रमुख नक्षत्र है।

वसंत ऋतु (मार्च, अप्रैल, मई) में दृष्टिगोचर होने वाले नक्षत्र मण्डल :-

मिथुन नक्षत्रमंडल (Gemini) : यह नक्षत्रमंडल कालपुरुष के उत्तरपूर्व में अवस्थित है। इसमें दो चमकदार तारे है जिन्हें कैस्टर और पुनर्वसु (पोलक्स) के नाम से जाना जाता है। कैस्टर सफेद नीले रंग का तारा है जबकि पुनर्वसु नारंगी लाल रंग का तारा है।

सिंह नक्षत्रमंडल (Leo) : मार्च के प्रथम सप्ताह में सिंह नक्षत्रमंडल दर्शन होना प्रारंभ हो जाता है। माघ, पूर्व फाल्गुनी और उत्तर फाल्गुनी इसके प्रमुख नक्षत्र हैं। यह मिथुन के पूर्व में स्थित रहता है।

कर्क नक्षत्रमंडल (Cancer) : यह नक्षत्रमंडल मिथुन और सिंह के मध्य स्थित है। यह Y आकार का है और थोड़े अधिक परिश्रम से ढूढ़ने पर दृष्टिगोचर होता है। कर्क नक्षत्र मंडल में पुष्य नामक तारों का एक समूह (गुच्छा) अवस्थित है। आश्लेष इस नक्षत्रमंडल का प्रमुख तारा है।

काग नक्षत्रमंडल (Corvus) : यह चित्रा (कन्या नक्षत्रमंडल) के पश्चिम में स्थित है। हस्त नक्षत्र इसका प्रमुख तारा है।

ग्रीष्म ऋतु (जून, जुलाई, अगस्त) मे दृष्टिगोचर होने वाले नक्षत्रमंडल :-

बूटेस (bootes) नक्षत्रमंडल : स्वाति इस नक्षत्रमंडल का प्रमुख तारा है। स्वाति नारंगी लाल रंग का चमकदार नक्षत्र है।

कन्या नक्षत्रमंडल (Virgo) : सप्तर्षि मंडल के हैंडल से बने हुए वृत्त खंड को आगे बढ़ने पर एक सफेद चमकदार नक्षत्र दृष्टिगोचर होता है, यह नक्षत्र चित्रा कहलाता है। चित्रा, कन्या नक्षत्रमंडल का प्रमुख नक्षत्र है।

वृश्चिक नक्षत्रमंडल (Scorpius) : यह गर्मी के मौसम में दक्षिण दिशा में दिखता है। नारंगी लाल रंग का अत्यधिक चमकीला तारा है। ज्येष्ठ इसका प्रमुख नक्षत्र है। ज्येष्ठ एक लाल दानव नक्षत्र है, मूल नक्षत्र एवं अनुराधा नक्षत्र भी इसी नक्षत्रमंडल के तारे हैं।

धनु नक्षत्रमंडल (Sagittarius) : यह वृश्चिक के लगभग पूर्व दिशा में स्थित है। पूर्व आषाढ़ एवं उत्तर आषाढ़ इसके प्रमुख नक्षत्र हैं।

लयरा नक्षत्रमंडल (Lyra) : धनु के उत्तर में यह नक्षत्रमंडल स्थित है एवं अभिजीत इसका प्रमुख नक्षत्र है।

तुला नक्षत्रमंडल (Libra) : यह कन्या एवं वृश्चिक के मध्य स्थित है। विषुव के दौरान जब रात और दिन बराबर होते हैं, तब सूर्य इसी नक्षत्रमंडल में रहता है। शायद इसी वजह से इस राशी को तुला नाम दिया गया है। विशाखा इस नक्षत्रमंडल का प्रमुख तारा है।

हेमंत काल (सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर) मे दृष्टिगोचर होने वाले नक्षत्र मण्डल :

हंस (सिग्नस) नक्षत्रमंडल (Cygnus) : यह लयरा के पूर्व में स्थित है। इसका एक नक्षत्र अल्फा - सिग्नाई अब तक जाने गए तारों में सबसे विशालकाय है। यह सूर्य से 70,000 हजार गुणा चमकीला है।

अक्विला नक्षत्रमंडल (Aquila) : हंस (सिग्नस) के दक्षिण में अत्यंत चमकीला तारा श्रवण स्थित है। इस तारे के अगल बगल में जो तारे हैं उन्हें किंवदन्तियों में श्रवण के माता पिता के रूप में पहचाना जाता है।

पेगासस नक्षत्रमंडल (Pegasus) : सिग्नस के ठीक पूर्व में यह नक्षत्रमंडल अवस्थित है। इसके चार तारे एक चौकोर की आकृति बनाते हैं। अगर हमारा मुख उत्तर दिशा में हो तो एक उछलते हुए घोड़े की आकृति बनती नजर आएगी। पूर्व भाद्रपद एवं उत्तर-भाद्रपदा इसके प्रमुख नक्षत्र हैं।

एंड्रोमेडा नक्षत्रमंडल (Andromeda) : यह पेगासस के उत्तर पूर्व में स्थित है। इस नक्षत्र मंडल में एंड्रोमेडा आकाशगंगा अवस्थित है।

मीन नक्षत्रमंडल (Pisces) : यह पेगासस के चतुर्भुज के दक्षिण पूर्व मे स्थित है।

मकर नक्षत्रमंडल (Capricorn) : यह सिग्नस के सीधे दक्षिण में कुछ दूरी पर अवस्थित है। भारतीय पंचांग के अनुसार 14 जनवरी को सूर्य धनुराशी से मकर राशी में प्रवेश करता है। इस दिन मकर संक्रांति का पर्व मनाया जाता है।

कुम्भ नक्षत्रमंडल (Aquarius) : यह पेगासस के दक्षिण में अवस्थित है। शतभिषा इसका प्रमुख नक्षत्र है।

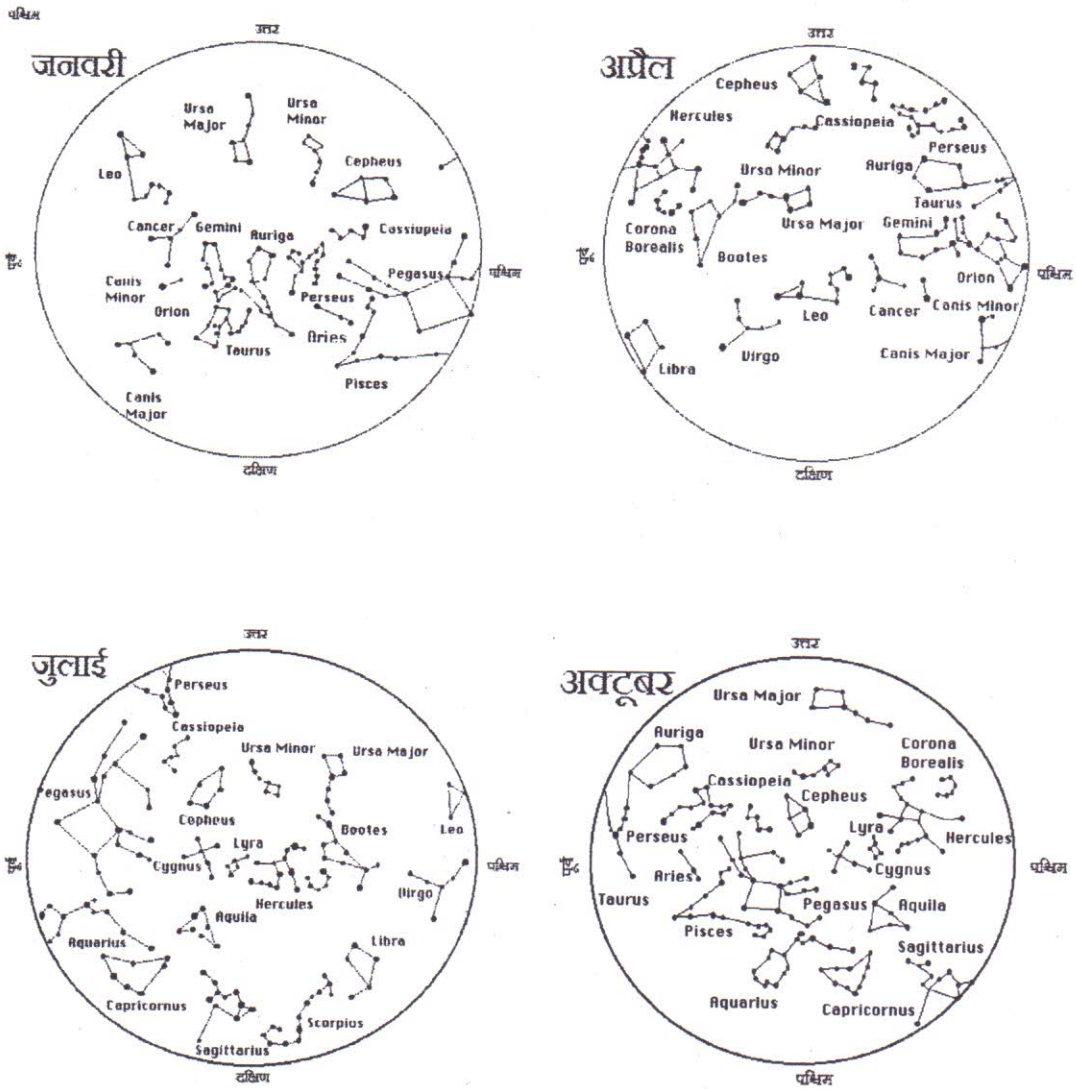

विशेष टिप्पणी : आकाशीय मानचित्र को सिर के ऊपर की तरफ रख कर देखा जाता है, ठीक उस तरह जैसे कोई लेटकर किताब पढ़ता हो।

कुछ नक्षत्रो के संस्कृत एवं पाश्चात् नाम

संस्कृत नाम	पाश्चात्य नाम	संस्कृत नाम	पाश्चात्य नाम
लुब्धक	Sirius	मृगशिरा	λ, ϕ Orionis
रेवती	Epsilon Piscium	पुनर्वसु	Pollux
श्रवण	Alpha Aquila	पुष्य	Y, and Cancri
अनुराधा	Alpha Scorpi	माघ	Regulus
आर्द्रा	Betelgeuse	पूर्व फाल्गून	and Leonis
अश्विनी	Arietis	उत्तर फाल्गुन	Denebola
आश्लेष	and Hydrae	हस्त	Corvi
मूल	Shaula	चित्रा	Spica
बाणराज	Rigel	स्वाति	Arcturus
भरणी	35, 39 and 41 Arietis	$\beta, \varepsilon, \eta, \rho$ विशाखा	Librae
चित्रा	Spica	ज्येष्ठ	Antares
कृतिका	Pleiades	पूर्व आषाढ़	Sagittarii
रोहिणी	Aldebaran	उत्तर आषाढ़	Sagittarii

गीतिका (बदला बदला)

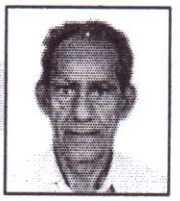

रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र

बदला-बदला लगता है व्यवहार जमाने का,
कुछ-से-कुछ हो गया आज आचार जमाने का।
हिंसा रक्तपात चोरी हैं अब नित की खबरें,
लगता बहुत कठिन है अब उद्धार जमाने का।
भ्रष्टाचार घोटाले करके वो सुख से सोते हैं,
कैसे होगा अब सपना साकार जमाने का ?
लोग समर्थन देते, लेते हिस्सा सत्ता में,
लोकतंत्र के नाम मिला उपहार जमाने का।
आज अशुभ को अशुभ समझता कौन बताओ तो,
अपराधों को मिलता है सहकार जमाने का।
प्यार वफा मैत्री का मूल्य वसूल है मितवा,
आकर देखो कभी कभी बाजार जमाने का।
कर्तव्यों का बोध नहीं, कौन देश की सोचे ?
मौज-मस्तियाँ करने का अधिकार जमाने का।
कहने भर के नाते हैं, नातों में सार नहीं,
मझधारों में छोड़ गया है प्यार जमाने का।
दौड़-दौड़ कर बैठ गया है अश्व जमाने का,
कहता है, चाबुक मत मारो, यार जमाने का।

कैसे कह दूँ उपवन तेरा मधुमास बना रह पायेगा

विद्या अैय्यर

कैसे कह हूँ उपवन तेरा मधुमास बना रह पायेगा ?
फूलों को मैंने खिलते और बिखरते दोनों देखा है,
कैसे कह दूँ उपवन तेरा मधुमास बना रह पाएगा ?
होते है जहाँ फूल लाखों पतझड़ वहीं पर आता है,
पतझड़ जहाँ डसता होता, मधुमास वहीं मुस्काता है ।
यह परिवर्तन की धूप-छाँव, जग जीवन का शाश्वत क्रम है,
केवल मुस्काने की उमंग, सपनों में पलता विभ्रम है।
सपनों को मैंने, बनते और टूटते दोनों देखा है ।
कैसे कह दूँ हर स्वप्न तुम्हारा पूरा ही हो जायेगा ।
जिन नयनों में मधुस्वप्न भरे, उनमें ही आँसू पलते हैं,
जिन अधरों से है तृप्ति सुखद, वे ही तृष्णा में जलते हैं,
सपने तो रुठे नयनों से, पर सूखा न आँसू का सागर,
खारा जल बढता रहा, फूटी केवल रीती गागर,
गागर को मैंने भरते और फूटते दोनों देखा है ।
कैसे कह दूँ यह कलश तुम्हारा, सदा भरा रह पायेगा ।
जो भी जन्मा इस धरती पर पैदा होते ही रोया है ।
जागा जीवन भर रोते ही, दो पल न चैन से सोया है ।
सुख, रुप और श्रृंगार सदा महका दो दिन, फिर चला गया ।
जिसने अभिमान किया निज पर, वह अहं स्वयं से छला गया ।
सूरज को मैंने चढ़ते और उतरते दोनों देखा है,
कैसे कह दूँ अभिमान तुम्हारा, तुम्हें अमर कर पायेगा,
फूलों को मैंने खिलते और बिखरते दोनों देखा है,
कैसे कह दूँ उपवन तेरा मधुमास बना रह पायेगा ?

खामोशी

ए. एम. दवे

गुजरे हुये सालों की तुम बात न करो,

अब मेरे तन्हा होने की खबर न दो ।

बेवजह मुझे सबे गम में परेशान करेंगे,

जालिम है लोग हर साल का हिसाब मांगेगे ।

मेरे तन्हा होने की खबर फैलायेंगे,

उनके आने - जाने की खबर रखेंगे ।

उनके चेहरे की लकीरों को पढ़ने की कोशिश करेंगे,

फिर उस जगह का जिक्र ले आयेंगे,

जहाँ से शुरु हुआ वहाँ तक ले आयेंगे ।

वक्त को जरा यूँ ही गुजर जाने दो,

सवालों पर सवाल उन्हे अब करने दो ।

जवाबों का अलग मतलब निकालेंगे,

गुजरे सालों को फिर उनसे जोड़ लेंगे ।

खामोशी ही सवालों पर लगाम है अब तो

कि गुजरे हुये वक्त पर ना कोई बात करे ।

मेरे नाना मेरे आदर्श

सोहम मुखर्जी
पुत्र मल्लिका मुखर्जी

मेरे नाना जी स्वर्गीय श्री क्षितीशचन्द्र भौमिक को जब भी मैं याद करता हूँ, मेरा सिर श्रद्धा से झुक जाता है, आँखे नम हो जाती है। मेरे जीवन को सही दिशा देने में मेरे मातापिता के साथ – साथ नाना जी का भी महत्वपूर्ण योगदान है । नाना जी हम सब के लिए सम्माननीय और पूजनीय व्यक्ति थे। एक ऐसे इन्सान जिन्हें जिंदगी से कभी रूठते नहीं देखा । जिंदगी के प्रति उनका नजरिया अगर मैं यहाँ पेश कर पाऊँ तो उन के प्रति मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

नाना जी कहा करते थे 'सुख और दुःख मन की अनुभूति है।' हर हाल में वे खुश रहते थे। उन्होंने कभी दुःख की अनुभूति को अपने पास नहीं फटकने दिया और सुख के अहसास को कभी खुद से दूर नहीं जाने दिया।

बचपन में मुझे उन का अपार स्नेह और मार्गदर्शन मिला है। अपार ज्ञान, असीम स्नेह से छलकता ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व मैंने नहीं देखा। वे 'सादा जीवन उच्च विचार' में विश्वास करने वाले व्यक्तियों में से एक थे। सादगी उन के जीवन का एक खास पहलू था। वे कहते, 'इन्सान अपने गुणों से जाना जाता है। कीमती और फैशनेबल कपड़ों से नहीं।' उन्होंने भारत का स्वातंत्र्य संग्राम देखा था। स्वतंत्रता के बाद अखंड भारत का धर्म के नाम पर जब विभाजन हुआ तब उन्हें अपनी मातृभूमि पूर्व बंगाल (आज का बाँग्लादेश) छोड़ कर पश्चिम बंगाल में आकर शरण लेनी पड़ी क्यों कि पूर्व बंगाल अब पाकिस्तान का हिस्सा बन चुका था। उन्हें अपना घर, जमीन-जायदाद, दोस्त सब कुछ छोड़ना पड़ा तब भी वे कहते, 'देश का विभाजन एक ऐतिहासिक घटना थी, उस में न हिन्दू कसूरवार था न ही मुस्लिम। यह तो एक राजनैतिक खेल था। जिस में हिन्दू और मुस्लिम दोनों ने बहुत कुछ खोया। आजादी की बड़ी कीमत चुकाई हमने, देश के विभाजन के रूप में।' उनका हृदय देशभक्ति से भरा हुआ था।

नाना जी पूजापाठ और क्रिया-कांड में इतना विश्वास नहीं करते थे, पर उनका मानना था कि जिस से जीवन में अभ्युदय होता है और आत्मा का परम कल्याण होता है वह धर्म है। इन्सान का वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन सुखपूर्ण एवं समृद्ध है तो उसे अभ्युदय कहते है। यह सब जिस तरह के जीवन व्यवहार से मिलना है वह धर्म है और उस तरह का जीवन जो जीता है वह धार्मिक

है। नाना जी सही मायने में धार्मिक थे। धर्म निरपेक्षता के बारे में उन के ख्याल भी निराले थे। वे कहते, 'धर्म निरपेक्षता हमारे लिए कोई आदर्श नहीं, हमारी विशिष्ट परिस्थिति का तकाजा है क्योंकि इस ख्याल के बिना, इतने सारे राज्य, इतने धर्म, इतने संप्रदाय, इतनी सारी जातियाँ, इतनी भिन्न संस्कृति, भिन्न वंश और भिन्न भाषा वाले भारत देश को एकसूत्र में किस तरह बांधा जा सकता था ? विभिन्नता में एकता हमारी विशिष्टता है।'

नाना जी अनुशासन के हिमायती थे। हमेशा मुझे पढ़ाई में मार्गदर्शन देते रहते थे। विविध क्षेत्रों में प्रगति करने के लिए मुझे प्रोत्साहित करते रहते थे। वे कहते, 'विद्यार्थी-जीवन मनुष्य के जीवन का स्वर्ण काल है। जीवन का सर्वांगीण विकास करना ही विद्यार्थी जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। आदर्श विद्यार्थी ही देश का आदर्श नागरिक बन सकता है। अनुशासन, आज्ञापालन, संयम, नियमितता, कर्तव्यनिष्ठा, परिश्रम, सभ्यता, आदि के पाठ व्यक्ति को अपने विद्यार्थी जीवन में ही पढ़ने चाहिए।'

झूठ, लोभ, रिश्वत, द्वेष, ईर्ष्या आदि बुराइयों से तो नाना जी कोसों दूर थे। घमंड तो उन्हें छू भी नहीं पाया था। वे कहते थे, 'मेरी संतानें ही मेरी संपत्ति है, आर्थिक संकट के रहते भी उन्होंने अपनी संतानों को उच्च शिक्षा दिलवाई। पूर्व बंगाल के कोमिल्ला जिले के मोइनपुर नामक एक छोटे से गाँव में रहकर भी उन्होंने मेट्रिक्युलेशन तक की शिक्षा प्राप्त की और पश्चिम बंगाल में रहते उन्हें गुजरात राज्य (उस समय के बोम्बे राज्य) में पश्चिम रेल्वे में नौकरी मिली।

नाना जी नारी स्वातंत्र्य के भी हिमायती थे। वे कहते, 'मैंने मेरी भाभी, माँ, दादी माँ को कभी चूल्हे-चौके से बाहर आते नहीं देखा, हमारे परिवार की सभी महिलाएँ अनपढ़ थी और इसलिए असहाय भी थी। मैंने अपनी बेटियों को इसलिए उच्च शिक्षा दी है कि वे अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके, चूल्हा-चौकी के साथ-साथ आत्मनिर्भर भी बन सके।' वे मानते थे कि नारी स्वयं देवी है क्योंकि वह माँ है। नारी संसार रूपी वृत्त की केन्द्र बिन्दु है, जहाँ परिवार के सदस्य क्लान्ति से शांति पाते हैं। वे संयुक्त परिवार की संयोजिता नारी को ही मानते थे।

नाना जी के व्यक्तित्व के बारे में जितना कहा जाए, कम है। उनके जैसा सत्यनिष्ठ, कर्तव्यपरायण और नेकदिल इन्सान मैंने नहीं देखा। जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति विश्व में अपनी पहचान बना पाए। नाना जी जैसे कितने ही व्यक्ति जो समाज को श्रेष्ठता प्रदान करने में नींव की ईंट बनते हैं, वे ही सही मायने में सुधारक की भूमिका अदा करते हैं।

हमारा सारा परिवार उन्हें श्रद्धा से याद करता है एवं उनके बताए पथ पर चलने की अभिलाषा रखता है।

नेपाल में आया भूकम्प

कविश राठौर
सुपुत्र छत्रपाल सिंह राठौर

भूकम्प का अर्थ है पृथ्वी के वे कंपन, जो धरातल को कंपा देते है और इसे आगे पीछे हिलाते है। भूगर्भिक हलचलों के कारण भूपटल तथा उसकी शैलों में संपीडन एवम् तनाव होने से शैलों में उथल पुथल होती है, जिससे भूकम्प उत्पन्न होते हैं । भूकम्प की तीव्रता मापन के लिए रिक्टर स्केल का पैमाना इस्तेमाल किया जाता है।

वर्ष 2015, नेपाल के लिए तबाही का साल रहा है। 25 अप्रैल, 2015 को आये भूकम्प का मंजर दिल दहला देने वाला था। इन दिनों प्राकृतिक आपदाओ ने पूरे नेपाल को तहस नहस करके रख दिया। 25 अप्रैल के पश्चात् आये भूकम्प के अनके झटकों ने वहाँ के जन-जीवन और आर्थिक व्यवस्था को हिला कर रख दिया । हजारों लोग मर गये, कई बच्चे अनाथ हो गये और हजारों लोग बेघर हो गए।

नेपाल में आये भूकम्प की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 7.9 थी जो 25 अप्रैल, 2015 को सुबह 11.56 स्थानीय समय में घटित हुआ। भूकम्प का अधिकेन्द्र लामजुंग, नेपाल से 38 किलोमीटर दूर था । 1934 के बाद पहली बार नेपाल में इतना प्रचंड तीव्रता वाला भूकम्प आया जिसमें 10000 से अधिक मौते हुई और 7000 से अधिक घायल हुए। भूकम्प में कई महत्वपूर्ण प्राचीन ऐतिहासिक मंदिर व अन्य इमारतें भी नष्ट हुई हैं। भूकम्प के झटके चीन, भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान में भी महसूस किये गए।

भूकम्प के तुरंत बाद भारत - नेपाल मैत्री ने रफ्तार पकड़ ली और भूकम्प के तुरंत बाद राहत और बचाव के लिए एन.डी.आर.एफ. की 10 टीमे नेपाल भेजी गयी तथा 06 और टीमे भेजने की घोषणा की गई। 13 मिलिट्री एयरक्राफ्ट, 50 टन पानी और अन्य सामग्री भेजी गयी। एक मानव रहित एरियल विमान भी भेजा गया ताकि नुकसान का जायजा लिया जा सके। आंकलन है कि उक्त नेपाल त्रासदी से लगभग 80 लाख लोग प्रभावित हुए हैं।

त हुआ।
ल से 38
द पहली
ा भूकम्प
मौते हुई
ूकम्प में
मंदिर व
के झटके
न में भी

ाल मैत्री
ुरंत बाद
ार.एफ.
06 और
मिलिट्री
सामग्री
विमान
ा लिया
त्रासदी
ुए हैं।

दृष्टि

प्रदीप मधेशिया

नई दृष्टि, नई राह
है अब अपनी चाह,
छोड़ के भटके पथ को
बननी है मंजिल को राह,
अपना नई विचारधारा को
तलाशनी है जग में नई राह
ताकि न भरनी पड़े
उतार-चढ़ाव भरे जीवन में आह।
बस पता है इतना,
खुद बनानी है अपनी राह,
सफल होगा तब ये जीवन,
न होंगे कभी फिर हम गुमराह।
मंत्र ये सफल जीवन के,
अपना इन्हें तू कर उत्थान,
होगा इससे तुझे हासिल,
जीवन में शोहरत और शान,
और तुम भी लिख सको,
सफल जीवन की एक दास्तान।

मन पर नियंत्रण

ए. एम. दवे

शरीर और आत्मा के मध्य सेतु है मन। आत्मा वह बिंदु है जहाँ से मन उद्भूत होता है। शरीर मन का फैलाव है। मन मस्तिष्क की वह क्षमता है जो मनुष्य को स्मरणशक्ति, निर्णय शक्ति, चिंतन शक्ति, एकाग्रता आदि में सक्षम बनाती है। सामान्य भाषा में मन मस्तिष्क का एक प्रकार्य है जो किसी ज्ञातव्य को ग्रहण करने, सोचने और समझने का कार्य करता है। मन बड़ा भ्रामक है, जिद्दी है, बलवान है। मन की गति बड़ी तीव्र होती है। चित्त की वृत्तियाँ उसे चंचल बना देती है, इसीलिए मन को चंचल कहा गया है।

मन पर चारों ओर से तरह-तरह के विचारों का आक्रमण होता है। जब मन मस्तिष्क पर हावी हो जाता है तब मानव वही कार्य करने लगता है जो उसके स्वभाव में नहीं है। मन का गुलाम बन जाने से जीवन में बहुत कुछ खोना पड़ता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज के रीती-रिवाजों को मानकर उसे चलना पड़ता है। कभी ऐसा भी होता है कि मन की गुलामी करते-करते जीवन के अनेक अच्छे काम छूट जाते हैं।

एक बार मन की ताकत को पहचान लिया जाए तो पता चलता है कि मन अनंत और अपार शक्तियों का स्वामी है। मन के अन्दर का संकल्प ही बाह्य जगत में नवीन आकार धारण करता है। हर विचार पहले मन में उत्पन्न होता है और मानव अपने विचार के आधार पर ही अपना व्यवहार निश्चित करता है, यानि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही करते हैं और वैसा ही होता है। मित्रों, जीवन में सफलता हासिल करने हेतु मन पर काबू पाना बहुत जरूरी है। दृढ़ निश्चयी मन का संकल्प बड़ा बलवान होता है। आप को यह मानकर चलना होगा कि जैसा हमारा विचार है वैसी ही दुनिया है। इसीलिए मन के गुलाम मत बनो, मन के

मालिक बनो। हमने लोगों को अक्सर यह कहते सुना है- आज मेरा मन नहीं है, आज रहने दो, कल देखेंगे, मेरा मन नहीं मानता... पर क्यों ? हमें मन को अपने वश में करना है। हर पल यह ध्यान रखना है कि कोई भी गलत विचार मन में न प्रवेश कर जाए। सर्वप्रथम मन को नियंत्रित करने का अभ्यास करें। प्रतिदिन कुछ समय अकेले में रहें। अपने जीवन के सभी पक्षों के बारे में विचार करें। अपने गुणों का विस्तार करने की दिशा में सोचें। अपनी कमियों को ढूंढें तथा उन्हें सुधारने की दिशा में सोचें। नई-नई चीजों के साथ जुड़ें। अपने आस-पास की चीजों को, प्रकृति को, संसार को प्रेमभाव से देखें। दूसरों के प्रति आभारी रहें। आलोचना में समय बर्बाद न करें। मन को हमेशा शांत रखने की कोशिश करें क्योकि अगर मन शांत नहीं है तो मिलने वाली सफलताओं में भी मन नहीं लगता और मन शांत हो तो हम चीजों को सही रूप में देख पाते हैं, उनके सही अर्थ तलाश पाते हैं। जहाँ मन का खेल दिखे, उसे सहयोग न दें। असहयोग से मन विसर्जित हो जाता है। मित्रों, मन पर काबू पाने का उत्तम उपाय है, ध्यान। ध्यान के जरिये आप भटकते मन को एकाग्र कर सकते हैं। हमें यह कोशिश करनी है कि हमारा मन सतत् श्रेष्ठ विचारों में बहता रहे।

महावीर जैन, भगवान बुद्ध, स्वामी विवेकानंद जैसी महान विभूतियाँ इनके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। भले ही हम उनकी ऊँचाईयाँ छू नहीं सकते, पर उनसे प्रेरणा लेकर मन पर विजय पाने की दिशा में आगे अवश्य बढ़ सकते हैं। क्यों न आज से, अभी से ही शुरू करें ?

हिन्दी पखवाड़ा 2014

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद के सभागार में कार्यालय महालेखाकार (आ. एवं रा.क्षे.ले.प.) गुजरात, अहमदाबाद; कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद; कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) गुजरात, शाखाः अहमदाबाद और कार्यालय महालेखाकार (सामान्य व सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, शाखाः अहमदाबाद के द्वारा संयुक्त रुप से हिन्दी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 15 सितम्बर 2014 से 30 सितम्बर 2014 तक किया गया। पखवाड़े का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्रीमती नीलम कुलश्रेष्ठ, प्रधान महालेखाकार श्री यशवंत ठाकरे और प्रधान निदेशक श्री डी.पी. यादव ने किया। अतिथि विशेष, प्रधान महालेखाकार महोदय और प्रधान निदेशक महोदय ने कार्यालय से प्रकाशित संयुक्त हिन्दी पत्रिका "आरोहण" के वर्ष 2013-14 के अंक का विमोचन भी किया।

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन बड़े जोश और उत्साह के साथ किया गया और चारों कार्यालयों के सदस्यों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय, सांत्वना-प्रथम और सांत्वना-द्वितीय पुरस्कार और प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। हिन्दी अनुभाग के द्वारा कार्यालय के सभी सदस्यों से अपना कार्यालीन कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करने की अपील की गई।

30 सितम्बर 2014 को आयोजित समापन समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती अंजना संधीर थीं। श्रीमती रूपल प्रकाश, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) ने समापन समारोह की मुख्य अतिथि महोदया का आभार व्यक्त किया और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को तथा हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए हिन्दी अनुभाग में कार्यरत सदस्यों को बधाई दी।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

1-04-2014 से 31-03-2015 के दौरान नई भर्तियों / पदोन्नतियों / सेवानिवृत्तियों / ऐच्छिक सेवानिवृत्तियों का विवरण

01). नई भर्तियाँ :-

लेखा परीक्षक	:	04
डी.ई.ओ.	:	01
एस.सी.डी.	:	01
एम.टी.एस.	:	08
कुल	:	**14**

02) पदोन्नतियाँ :-

व.ले.प.अ. कॉडर में	:	15
ले.प.अ. कॉडर में	:	13
स.ले.प.अ. कॉडर में	:	05
पर्यवेक्षक	:	04
व. लेखापरीक्षक कॉडर में	:	13
लेखापरीक्षक कॉडर में	:	19
सी-टी	:	14
कुल	:	**73**

03) सेवानिवृत्तियाँ :-

कल्याण अधिकारी	:	01
व.ले.प.अ.	:	02
पर्यवेक्षक	:	04
व. लेखापरीक्षक	:	03
एम.टी.एस.	:	01

04) ऐच्छिक सेवानिवृत्ति

व.ले.प.अ.	:	02

05) श्रृद्धाजंलि

एम.टी.एस.	:	01

स्वास्थ्य प्रवृत्तियाँ

1. दि. 11-4-14 को शाम 3 से 4 बजे डॉ. लव बी सेलारका द्वारा डिफनेस स्नोरिंग विषय पर संभाषण आयोजित किया गया

2. दि. 23-4-14 को शाम 3 से 4 बजे तक ऑडिटोरियम मे डॉ. दीप्ति जैन ने जनरल गायनिक प्राबलम, गायनिक केन्सर विषय पर संभाषण दिया

3. दि 1-5-14 को दोपहर में डॉ. दिपेन देसाई नेत्र चिकित्सक द्वारा आँख एवं आखों से संबन्धित होने वाली बिमारियाँ एवं इलाज पर अपना संभाण दिया।

4. दि. 15-5-14 व 16-5-14 को दोपहर 2.30 से 5.30 बजे तकनिधि होस्पिटल के डॉक्टरो द्वारा निशुःल्क डेन्टल केम्प का आयोजन किया।

5. दि. 23-5-14 को दोपहर 3.00 बजे शाम 4. बजे डॉ. अरविंद शर्मा द्वारा हेडएक, एक्यूट स्ट्रोक मेनेजमेंट विषय पर अपना संभाषण दिया था।

6. दि. 5-6-14 को ऑडिटोरियम में अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस मनाया गया जिसमें पर्यावरण सम्बंधित जागरूकता पर स्क्रिप्ट पठन एवं पर्यावरण पर आधारित कविता पठन का कार्यक्रम हुआ।

7. दि. 11-6-14 को दोपहर 4.00 बजे से 5 बजे तक ऑडिटोरियम में डॉ. सुनील पोपट ने हेल्थ अेवरनेस के अंतर्गत पेट के रोग एवं उपचार विषय पर अपना संभाषण प्रस्तुत किया

8. दि. 4-7-15 को शाम 4 बजे से 5 बजे ऑडिटोरियम में डॉ. जयेश त्रिवेदी द्वारा कार्डिक हाईपरटेन्शन डायबिटिज एवं एन्थ्रोस्केरोसीस जैसी बीमारियाँ पर रोकथाम विषय पर संभाषण प्रस्तुत किया

9. दि. 15-8-14 को प्रात 9 बजे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कार्यालय प्रांगण में ध्वजारोहण का कार्यक्रम संपन्न हुआ। तत्पश्चात् कार्यालय सदस्यों के बच्चे जिन्होंने कक्षा 10 या 12 में 85 या अधिक अंक प्राप्त किये है उन्हें पुरस्कृत किया गया।

10. प्रत्येक माह के अंत में सेवानिवृत्त हो वाले कर्मचारियों के सम्मान हेतु सेवानिवृत्ति समारोह आयोजित किया जाता है।

मौन एक कला है, साथ ही वागमिता भी एक कला है। किन्तु ऐसा व्यक्ति जो ध्यानपूर्वक सुनता, स्पष्ट रुप से प्रश्न करता, शान्तिपूर्वक बोलता, ठंडे दिल-दिमाग से मृदुभाषा में उत्तर देता है और जब उसे कोई बात कहनी नहीं होती तब चुप रहता है, बातचीत की कला की समस्त विशिष्टताओं से पूर्णतः सम्पन्न होता है, ऐसा निस्संकोच भाव से किसी भी गोष्ठी या मित्रमंडली की शोभा बढ़ा सकता है।

अगर सफल जीवन जीना है, बातचीत की कला सीख लो।
कला साधना से आती है, करना नित अभ्यास सीख लो॥

बोली बहुत अनमोल है, सोच-समझकर बोल।
अनुचित-उचित विचार कर, बोलन को मुँह खोल॥

निज भावना सभी को प्रिय है, बात सदा यह ध्यान रखें हम।
ठेस किसी को न लगाएँ, बातें करें न विपरीत कभी हम॥

सद्भावना रखें सबके प्रति, सबके हित की बात करें हम।
दिल सबका कोमल होता है, उस पर ना आघात करें हम॥

हिन्दी हमारा सम्मान है ।

विशेष उपलब्धि

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा) गुजरात अहमदाबाद में कार्यरत श्री बालमुकुन्द त्रिपाठी, सीनियर ऑडिटर ने नराकास, अहमदाबाद की तरफ से दिनांक 16-4-15 को आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्हे इस सफलता पर हार्दिक बधाई।

- ☞ टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
- ☞ मसौदें हिन्दी में तैयार किजिए।
- ☞ शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- ☞ अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- ☞ अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए।

आरोहण

ऑडिट भवन, अहमदाबाद

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद

तथा

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद

ऑडिट भवन, नजदीक ईश्वर भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद – 380009.